ॐ

ओ३म प्रियं सर्वस्य पश्यन्त उत् शुद्रं उतार्ये (अथर्ववेद)

अर्थ : हे प्रभु हम सभी ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य शुद्र प्रेम से रहे ऐसी भावना हो

महर्षि दयानन्द 'सरस्वति'

सन्त शिरोमणि गुरु रविदास

जीवन दर्शन

एवं

महर्षि दयानन्द 'सरस्वती'

व

सन्त शिरोमणि गुरु रविदास जी

का

संक्षिप्त इतिहास

रचनाकार :

डा० श्यामसिंह चौहान "आर्य"

मानव हितकारी चिकित्सालय

खुब्बनपुर (हरिद्वार)

ओ३म् प्रियं सर्वस्य पश्यन्त उत् शुद्रं उताये (अथर्ववेद)

(अर्थ : हे प्रभु हम सभी ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र प्रेम से रहे ऐसी भावना हो)

महर्षि दयानन्द 'सरस्वती'

सन्त शिरोमणि गुरू रविदास

जीवन दर्शन

एवं

महर्षि दयानन्द 'सरस्वती' व सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का संक्षिप्त इतिहास

रचनाकार :

डा0 श्यामसिंह चौहान "आर्य"

मानव हितकारी चिकित्सालय

खुब्बनपुर (हरिद्वार)

सादर समर्पण

परम पूज्य श्रद्धेय

डा० दिव्यानन्द 'सरस्वती' जी महाराज

अध्यक्ष :-

1) पातञ्जली योगधाम आश्रम,
ज्वालापुर (हरिद्वार)

2) महर्षि दयानन्द योगधाम,
एस.जी.एम. नगर, फरीदाबाद (हरियाणा)

एवं

संरक्षक :-

वैदिक साधना आश्रम तपोवन (देहरादून)

जिन्होंने योगासन एवं शास्त्राध्यन ज्ञान दिया, उन्हें मैं कोटिशः आभार प्रकट कर चरणों में नत् मस्तक हो, शत् शत् नमन कर, यह **'जीवन दर्शन'** पुस्तिका समर्पित करता हूं।

गुरू सेवक :
डा0 श्यामसिंह चौहान 'आर्य'
मानव हितकारी चिकित्सालय
खुब्बनपुर (हरिद्वार)

ओ३म्

ओ३म वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥
(यजुर्वेद 31/18)

जीवन दर्शन

एवं

महर्षि दयानन्द 'सरस्वती' व
सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का
संक्षिप्त इतिहास

सप्रेम भेंट

: रचनाकार :

डा0 श्यामसिंह चौहान "आर्य"
आयुर्वेद रत्न (इला.)
आर.एम.पी.बी.आई.एम. (लख.)
मानव हितकारी चिकित्सालय
खुब्बनपुर (हरिद्वार)
सभासद : आर्य प्रतिनिध सभा (उत्तराखण्ड)
पूर्व सदस्य : प्रान्तीय परिषद् (भा.ज.पा.)

प्रथम संस्करण :
चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं० 2068 वि०
दिनांक : 4 अप्रैल 2011 ई.
मूल्य : 40 (चालीस रुपये मात्र)

: सम्मति :
डा0 स्वामी दिव्यानन्द 'सरस्वती'
अध्यक्ष : पातञ्जल योगधाम,
आर्यनगर (हरिद्वार) एवं
संरक्षक : वैदिक साधना आश्रम
तपोवन, देहरादून।

स्मृति में समर्पित

मेरे सपनों को साकार कर्त्री,
मेरे जीवन में रक्षार्थ सक्रिय समर्पित
मेरी निराशाओं को आशाओं में परिवर्तन कर्त्री
सन्मार्गग्रामी -- सत्यवादी
मेरी आदर्श अर्धांगिनी

स्व0 श्रीमति ओ३्मकली रानी (भू.पू. सदस्या बी.डी.सी.)

(जन्म 5-02-1950) (मृत्यु 15-7-2010 आषाढ़ शुक्ला चतुर्थी 2067 वि.)

की

स्मृति में प्रकाशित

(मेरे कर्त्तव्य सुमन)

जीवन दर्शन

महर्षि दयानन्द 'सरस्वती' एवं सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का इतिहास

डा0 श्यामसिंह चौहान 'आर्य'
मानव हितकारी चिकित्सालय
खुब्बनपुर (हरिद्वार) उत्तराखण्ड।

विषय - सूची

क्र.	विवरण	पृ सं.

दो शब्द

मनुष्य के जीवन में धर्म व कर्म ही प्रधान है। स्वस्थता तीसरे स्थान पर है। क्योंकि स्वस्थता केवल मनुष्य के व्यक्तिगत हितार्थ है। धर्म व कर्म दूसरों के भी हितार्थ होता है, और वह परमपिता धर्म कर्मो के अनुसार ही प्रसन्न व अप्रसन्न होकर, सुफल व कुफल देता है। जिससे भविष्य में मुक्ति या बेमुक्ति पथ मिलता है। इससे यह जान लेना चाहिए कि श्रेष्ठ धर्म व श्रेष्ठ कर्म से ही, जब सभी लाभकारी होते हैं, क्यों न अच्छे धर्म कर्म करेंगें, अच्दे धर्म भी होंगे, सुपथ प्राप्त होगा, स्वस्थ भी रहेंगे। जिस प्रकार पूर्व जन्म के कर्म फल से ही हमें मनुष्य की योनि मिली, अब उससे अच्छे धर्म कर्म करेंगे तो मनुष्य की महान श्रेणी में जा सकते हैं।

अच्छे धर्म-कर्म ईश्वरोपसना, योगज्ञान ईश्वर के गुण आभार हमें अपने में हर समय ध्यान रखने चाहिए। ध्यान व ज्ञान पूर्णरूप से प्राप्त कर के ही हमारे ऋषि-मुनि महान हो सके। इसको आवश्यक समझकर, इस पुस्तक में महर्पि दयानन्द 'सरस्वती- एवं सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी (दोनों ऋपियों का) संक्षिप्त इतिहास भी दिया गया है। अनेक धार्मिक रीति नीति भजन भी दिये हैं। आशा है पाठकगण ध्यान से पठन कर, उपयोग करेंगे।

सेवक :

डा0 श्यामसिंह चौहान आर्य

खुब्बनपुर (हरिद्वार)

मन की बात

प्रभुसविता ला देता है मन में, हर बार प्रणवः रटने के बाद।
अवश्य ही खिल जाती हैं कलियां, भौंरें फटने के बाद।।

सन् 1967-70 में मैंने आयुर्वेद (इला0) कोर्स करने के बाद चिकित्सा कार्य बिहारीगढ़ आरम्भ किया। उस के साथ पुरुषार्थ कार्य, जनसेवा, लोकदल, भा0ज0पा0 से मण्डल, जिले का दायित्व रहा, प्रान्तीय परिषद् सदस्य 2005 से 07 तक रहा। गत् वर्ष मैंने एक पुस्तक ''गौरक्षा देश रक्षा'' लिखी थी। मेरी आदर्श अर्धांगिनी स्व0 श्रीमति ओउ्मकली ने कहा - ''ये है मेरे मन की बात'' यह अच्छा कार्य है, जनता को भी लाभ और अपना समय घर पर ही व्यतीत होता है। उन्हें इस बात का मलाल सा हो गया था, क्योंकि गत त्रिस्तरिए चुनाव 2005 में मण्डल पदाधिकारी गण एवं माननीय श्री चन्द्रशेखर जी विधायक'' आदि ने सहमति से जि0पं0 सदस्यता का पर्चा (अलावलपुर सीट से) भरवा दिया, सारा कार्य, निशान मिलने पर सैकडों बैनर, सैंकडों पोस्टर, बैलेट आदि बनवाने में काफी धन खर्च हुआ था, परन्तु पदाधिकारियो ने यह कह कर बिठा दिया कि आगे और संस्थान में ध्यान रक्खेंगे। कोई ध्यान नहीं दिया, अब मैं जनता का साधारण सेवक हूं।

इसलिए उन्होंने कहा था कि यह कार्य ठीक है गौ हमारी माता है, लेख से प्रचार और फिर राष्ट्र व गौ-सेवा है। सहयोग देने को भी कहा, वे पुस्तक छपवाई गई फिर वहां कि स्वास्थ्य सम्बन्धी भी पुस्तक लिखो। मैंने ''सरल स्वास्थ्य, चिकित्सा, योगासन विधि'' पुस्तक लिख दी, वें बिमार हो गई। एक दिन मैं सन्ध्योपासना करके प्रातः बेला में ''ईश्वर प्रार्थना - ''मन्दिर यह देह प्रभुका'' गा रहा था, उन्होंने सुन करके कहा - ये किसका लिखा है बहुत अच्छा लगा। ऐसे और भजन

कुछ बनाओं, एवं महर्षि दयानन्द एवं सन्त रविदास जी की जीवनी लिखकर पुस्तक बनाओं। मैंने लिखना प्रारम्भ किया, वें 29 जनू 2010 को अधिक बिमार हो गई। रुड़की ले जाते समय गुरूकुल के पास ग्राम मार्ग पर (गेट किसी की स्मृति में बना है) पता उसे चला, कहने लगी कि लोग इतना खर्च करके, ऐसे काम करते हैं, इससे ना छावा ना और फायदा। स्कूल में कमरा होता, बच्चों के काम आता और गांव के लिए शव दाह छावा नहीं, वह बन जाता। उसी समय यह चर्चा भी सुनी कि लोग शवदाह छावे हेतु चन्दा इकटठा कर रहे हैं, वह कहने लगी कि इतने बड़े आदमी चन्दा एकत्र करना अच्छा मान रहे हैं, ऐसे तो दो ही आदमी बनवा सकते थे। मेरे से कहने लगी कि, ईश्वर सामर्थ्य दें हम सर्दियों में बनवा देंगें। उन्हें बिमारी बढ़ती गई, और दि0 15-7-2010 को ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग का निमन्त्रण दे दिया। वे चली गई, परन्तु मेरे ऊपर यह पुस्तक छपवाने तथा मुर्दा छावा ग्रह दोनों का भार छोड़ गई। उनकी मनोकांक्षानुसार शोकसभा में छावे के निर्माण करने की घोषण मैंने कर दी थी।

सभा में मा0 चन्द्रशेखर जी ''विधायक, श्री श्यामवीर सैनी राज्यमंत्री मण्डलाध्यक्ष मधुप त्यागी, पूर्वाध्यक्ष जगदीश, सुरेन्द्र वर्मा, नरेश धीमान, चौ0 मनोज महामन्त्री आदि तथा रिश्तेदार, गांव के वरिष्ठ सज्जन उपस्थित थे। सबसे कहा कि थोड़ा सा सहयोग केवल जमीन अच्छी जगह और समतल दिलाओं और कुछ नहीं चाहिए। कहीं भूमि शमशान हेतु नहीं मिल सकी। मैंने श्रीमान एस.डी.एम. साहब हरीशचन्द काण्डवाल जी से मिलकर निवेदन किया, उन्होंने प्रस्ताव कराके, शमशान भूमी स्थाई दर्ज कर दिये जाने के आदेश कर दिये। वह भूमि ख.न. 334 शमशान में दर्ज हो गई। निर्माण कार्य भी जनता का सहयोग व समर्थन के अभाव में रुका। और पुस्तक पूर्णप्रयास कर, अपने श्रद्धेय गुरू स्वामी दिव्यानन्द 'सरस्वती' एवं वैद्य श्री [illegible] जी के आशीर्वाद एवं

वरिष्ठ भ्राता मा0 सुमन्त सिंह आर्य की प्रेरणा व पथ प्रदर्शन के साहस से

रचित की। अपने गुरू स्व0 मा0 बलजीत सिंह आर्य के सुपुत्र श्री यशपाल आर्य के सहयोग का भी आभारी हूं। जिनसे प्रयासकर, मनोकांक्षा थीनी, स्व0 श्रीमति ओउ्म कली रानी की स्मृति में छपवाई।

आशा है पाठक कुछ धर्म लाभ ज्ञान प्राप्त करेंगे, और इन्सान सदैव त्रुटियों से भरा रहता है अतः त्रुटियों में क्षमा करेंगे। मृतक की आत्मा की शान्ति विनय करेंगे।

– सेवक :

डा0 श्याम सिंह चौहान 'आर्य'

– इति ओउम् शम् –

हे ईश्वर् प्रेरणा दात्री मार्ग दर्शक स्व० महादानी को
आत्मा शान्ति प्रदान की, कृपा करें ओउ्मे रानी को।।

•

पुत्र/पुत्री :
कर्मवीर सिंह (इंजी.)
गणेशपुर कालोनी (रुड़की)
रणबीर सिंह
फोटोग्राफर बस स्टैण्ड (चौली)
डा0 चन्द्रवीर सिंह (चौली प्लाट)
आयु0 प्रतिभा देवी
रविन्द्र कुमार (दामाद) कटारपुर हरिद्वार
स्व0 श्रीमती ओउम् कली के भ्राता :
यशपाल सिंह (मुखिया)
श्री जगपाल, श्री तेजपाल सिंह (मोदी)
श्री देवेन्द्र सिंह (उर्फ टौन्ना)
आनेकी कलां, हरिद्वार

मेरे वरिष्ठ भ्राता :
मा0 सुमन्त सिंह आर्य
(पूर्व जिलाप्रधान)
(जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा)
श्री बादूराम आर्य (प्रधान आर्य समाज)
भतीजे :
मा. कुंवरपाल सिंह चौहान, बहादराबाद (हरिद्वार)
ब्रह्मपाल सिंह, सुशील कुमार, अजय कुमार
विरेन्द्र सिंह, सूरज पाल सिंह (खुब्बनपुर)
विजय कुमार चौहान, अध्यक्ष
सह समिति (औरंगाबाद, हरिद्वार)

॥सन्देश॥

मैंने श्री वैद्य श्यामसिंह जी आर्य द्वारा लिखित लघु पुस्तिका महर्षि दयानन्द सरस्वती व सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र 'संक्षिप्त इतिहास' का आदोपान्त अध्ययन किया तथा उसका मनन भी किया। आपने इन महापुरूषों के जीवन चरित्र का काव्यमय रचना कर सरल भाशा में साधारण समाज तक पहुंचाने में बड़ा ही उपकार किया। इसी पुस्तक में अष्ठांग आयुर्वेद को भी संक्षिप्त रूप में दर्शाकर गागर में सागर भर के जनता के समक्ष दृशाकर बड़ा ही उज्जवल कार्य किया। इन्होंने एक पुस्तक "गौरक्षा-देशरक्षा" लिखी जो किसानों, आयुर्वेद शिक्षार्थियों को लाभप्रद हो रही है।

आप लेखक के अतिरिक्त समाज सेवक एवं राजनीति में भी कार्य कर रहे हैं। मैं आप से आशा करता हूं कि आप भविष्य में भी लेखन कार्य सुचारू रखेंगे।

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है। इति शुभम्

भवदीय :

वैद्य गीताराम 'मिश्र' "आयुर्वेदाचार्य"

भू०पू० प्रबन्धक, बी.एस.एम. महासभा, रुड़की

भू० पू० अध्यक्ष, गुरूकुल

ग्राम व पोस्ट खुब्बनपुर (हरिद्वार)

सेवा में,

डा० श्यामसिंह "आर्य"

ग्राम व पोस्ट खुब्बनपुर (हरिद्वार)

दिव्य सम्मति

वैदिक धर्म सबसे प्राचीन है क्योंकि वेद ईश्वरीय वाणी है। ईश्वर ने मनुष्य मात्र को सदुपदेश वेद के द्वारा देकर सभी प्रकार से कल्याण किया है। मध्यकालीन कई समाज सुधारकों ने वेद का अनुसरण करते हुएं जनसामान्य में प्रचार किया है। सन्तरविदास जी भी एक सुधार वादी सन्त हुए हैं, उनकी मान्यताएं विशेष रूप से वैदिक धर्म से प्रभावित है। उन्होंने जाति विशेष को ही ईश्वर की भक्ति करने का अधिकारी न मानकर मानव मात्र को ईश्वर भक्ति करने का अधिकारी माना है। कहीं उनकी मान्यता नवीन वेदान्त से भी प्रभावित हैं -

<u>संगठन का युग -</u> ऋग्वेद ज्ञान प्रधान वेद है उसके अन्तिम सूक्त में संगठन का प्रकार तथा महत्व बताया गया है। उसी ज्ञान के अनुसार वर्तमान युग में संगठन की आवश्यकता है। यदि कहीं मान्यताओं में भेद है तो उनका ध्यान न देकर समान मान्यताओं के अनुसार संगठन करना आवश्यक है। इसी उत्तम भाव को हृदयंगम करके डा0 श्याम सिंह आर्य ने महर्षिदयानन्द सरस्वती एवं रविदास जी की जीवनी के प्रमुख अवसरों का उदाहरण देकर सभी को ईश्वर भक्ति के लिए प्रेरित किया है।

कविता, राधेश्याम रामायण की तर्जो पर लिखा गया यह ग्रन्थ जन सामान्य के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा, ऐसी मेरी धारणा है। अतः पाठकों को इसका समादर करना योग्य है, तथा प्रकाशन वितरण जन सामान्य तक होना उपयोगी है। ईश्वर लेखक एवं सर्व पाठकगण को कुशल पूर्वक दीर्घायु बनायें।

मंगलाभिलाषी :

दिव्यानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, पातञ्जल योगधाम, आर्यनगर, हरिद्वार
महर्षि दयानन्द योगधाम, एस.जी.एम., नगर फरीदाबाद (हरियाणा)
संरक्षक वैदिक साधनाश्रम, तपोवन, देहरादून।

तेरी याद आती है "ओ३म् कली"

1) कैसे समझाउँ दिलको कि, उसको भुलाना होगा।
बस होके बेबस बेबसी का, नगमा ही, गाना होगा।।
बस होके बेबस.................

2) चलते-चलते मैं पिछड़ गया, तूने पाली मंजिल।
आखिर मेरी क्या ख़ता थी, तुम्हें बताना होगा।
बस होके बेबस.................

3) नगमें बहुत गाये थे, हम आसमानों में चह चहाये थे।
अब डूबते सूरज की लौ से, चिरागों को जलाना होगा।
बस होके बेबस.................

4) तेरे कह कहौं के बिना यह घर, घर नहीं रहा।
अब तेरी पर छाइयों से, दिल को बहलाना होगा।
बस होके बेबस.................

5) बन के तेरी फुलवारी का माली, मैं शायद जीता रहूंगा।
जो कर्ज तुने आयद किया, इसे तो निभाना होगा।
बस होके बेबस.................

6) यकीं हैं मुझे तेरा सपनों में, आना जाना होगा।
बस मेरी इतनी इलतजा को, तो निभाना होगा।
बस होके बेबस.................

7) थक्क जाऊँगा तो मैं भी, आऊँगा तेरे पास।
जाने कब तक यह बेरहम, नगमा गाना होगा।
बस होके बेबस.................

8) तेरी वफाओं का सदा, कर्जदार रहूंगा।
छू लूंगा ए पारस तुझे, जब कभी सामना होगा।
बस होके बेबस.................

– ओ३म् शम् –

चिन्तक वाचक :
श्याम सिंह चौंहान 'आर्य'
खुब्बनपुर, हरिद्वार।

रचनाकार :
द्रोण स्थली आर्य कं. गुरुकुल महावि0
देहरादून।

गायत्री मन्त्र

ओउम् भू:र्भुव:स्व:। तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि।
धियोयोन: प्रचोदयात्।। (ऋगवेद 3/62/10यजु.36/3)

गायत्री गाथा (अर्थ)

तीन अक्षर ओ उ म् ('अ', 'उ' 'म') भी वेद के प्रतीक निशान हैं।
रक्षक हैं ये ही हमारे, और सर्व गुणों की खान हैं।।

"ओउम्" को रक्षक मानो, तुम भी पर रक्षक बनो।
"भू:" प्राणाधार है तो ऐसे ही कर्तव्य करते रहो।।

"भुव:" दुख: विनाशक है प्रभु, हम भी अन्यों के दुख: हरते रहें।
"स्व:" आनन्द सुखदाता वो, हम भी औंरा को सुख प्रदान करते रहें।।

"तत्" वही है महानपिता, जो वेद वर्णित सार है।
"सविता" मां देती है प्रेरणा, शक्ति कर्म, मोक्षाधिकार है।।

"वरेण्यम्" वरण, अर्पण, शरणयोग्य, परमपूज्य आप हो।।
"भर्ग:" पापनाशक, अन्नदाता, निर्लेपव निष्पाप हो।।

"देव:" सबके शिरोमणि, आनन्ददाता पवन जल सूर्य आप हो।
"स्य" उसके आदेश से ही , हम दूसरों के हित कल्यानार्थ हो।।

"धीमहि" शुद्धबुद्धि, ओज, तेज, वह हम सबके अन्दर भरे।
"धिंया योन:" वह अपनी हितकारी बुद्धि के गुण हमारे अन्दर भरे।।

"प्रचोदयात्" ईश्वर हमें सुमार्ग कर, मोक्ष मंजिल पर गमन करें।
इस महामन्त्र का "श्यामसिंह" नित्यब्रह्म मूहर्त में पठन करें।।

-- ओउम् शम्--

ईश मिलन गीत

तर्ज : छुप गया कोई रे.....

किस विधि, बुलाऊँ ईश! तुम्हें मैं पुकार के।
शब्द ना हैं पास मेरे, प्रसन्नता व प्यार के ॥टेक॥

हर वक्त हैं सूनी-सूनी, मन पथ की गलियां।
पुष्प-पत्रों से खाली बनी, मेरे जीवन की ड़लियां॥
करुणा निधि हरित करदो, मनः मूल जल धार के ॥1 ॥
शब्द ना हैं पास मेरे, प्रसन्नता व प्यार के...

तूफानों से घिरा हूँ मैं, हो तुम ही एक सहारा।
डगमग हो रही नैया मेरी, इसे करो आप किनारा॥
खेवट हो तुम ही नैया के, करो ध्यान पार के ॥2 ॥
शब्द ना हैं पास मेरे, प्रसन्नता व प्यार के...

हर वक्त मेरे आप ही हो, करो तुम उजियारा।
कृपा करके दूर करदो, मेरे मन का अंधियारा॥
रात्री तम को प्रकाश करो, चन्द्रदेव प्रसार के ॥3 ॥
शब्द ना हैं पास मेरे, प्रसन्नता व प्यार के...

सारे ही इम्तिहानों में, हो जाऊं पास मैं।
आप ही सखा साथ हो, करता हूं आश मैं॥
कर बद्ध करे विनय ''श्यामसिंह'' प्रेम से पुकार के ॥4 ॥
शब्द ना हैं पास मेरे, प्रसन्नता व प्यार के...

किस विधि बुलाऊं ईश! तुम्हें मैं पुकार के। शब्द हैं ना....

हे ओ३म् जग के रक्षक

(तर्ज : हे ज्ञानरूप भ गवन)

हे ओउम् जगके रक्षक, रक्षा का दान दे दो।
सद्ज्ञान रस तत्व, करुणा निधान दे दो।।

कर पायें हम अपने, कष्टों का नाश प्रभु।
भैषज्य, आयुष्यमय, वेदों का सार दे दो। ।।1।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

हो तुम ही सुख के दाता, हरते सभी दुखों को।
दुखः कर सकें दूर सबका, वह स्वास्थ्य ज्ञान दे दो।।2।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

अन्यों से करुणा धीरज, शुद्ध प्रेम कर सके हम।
सद्गुण श्रेष्ठ भावना, हे ज्ञानवान दे दो।।3।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

पर हित में हों निछावर, दो प्रिय सत्यवाणी।
नित मीठे ही वाच बोले, ब्रह्म वर्चसः ज्ञान दे दो।।4।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

पर दोष को ना देखें, ना कंही बखान सकें हम।
अपयश कहीं मिलेना, शुभ गुण महान दे दो।।5।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

निर्विघ्न हो वें सम्पन्न, शुभ कार्य हमारे।
सर्व श्रेष्ठ विद जनों में, हमको स्थान दे दो।।6।।

हे ओउम् जग के रक्षक....

रहे दिव्यानन्द से मिलती, प्रेरणा "श्यामसिंह" को।
कल्याण होवे सबका, ऐसा वरदान दे दो।।7।।
हे ओउम् जग के रक्षक, रक्षा का दान दे दो।।

------ ----

मन्दिर यह देह प्रभुका

(तर्ज : बहुत याद करते हैं प्रभु तुमको हम)

"भजन"

मन्दिर यह देह प्रभुका, बनाया हुआ है॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है॥टेक॥
उसका है अन्न, जल, पवन, सारी धरा भी उसकी।
इक श्वाँस भी चल सके ना, बिन आज्ञा के उसकी॥
जीव सूक्ष्म नियम में, बसा या हुआ है॥1॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है।
हो ज्योति प्रकाश जिससे, शशि भान हैं बनायें।
एंक थल के दीप से जग, जगमक सभी कलाएं॥
दिन रात ऋतुयें नियमित, कौतुक दिखाया हुआ है॥2॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है।
हम हैं खिलौने उसके, वह खेल खेलता।
ना जाने कब टूटे यह, देह रूप ये खिलौना।।
अस्थिर यह खेल प्यारे, रचाया हुआ है॥3॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है।
निजकर्म के फलों की, गठरी है साथ सबके।
सब निर्णय कर्म फलका, लेकिन है हाथ उसके॥
होगा हिसाब इक दिन, कर्मफल जो कमाया हुआ है॥4॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है।
देह रथ है, इन्द्रियां घोड़े, मन लगाम धी सारथी।
इस भग्न शील रथ का, है आत्मा रथी॥
सुपथ ना तज देना 'श्यामसिंह दिव्यानन्द से पाया हुआ है॥5॥
फिर क्यों? घमण्ड में बन्दे, इतराया हुआ है।
मन्दिर यह देह प्रभुका, बनाया हुआ है॥

"गीत भजन"

ईश्वर की अजब महिमा

(तर्ज : धन-2 तेरी कारीगरी के करतार)

किस तरह सृष्टि की तूने, रचना करी हे भगवान ॥टेक ॥
युगों-युगों के भी जन्म मरण से, ना उतार सके अहसान ॥

हो निराकार व निर्विकार, प्रभुसाकार रचाया जग कैसे ?
हों सृष्टि कर्ता धर्ता हरता, रहता फिर अनहग कैसे ?
तू था जागृत स्वप्न सुषप्त जब, रचा मुक्ति का मग कैसे ?
उर्ध्वा नभ, धुर्वा जल, बिन कल, स्थिर है थल, भग कैसे ?
अजीब बात, भान शशि दिन रात, स्थिर चलें पथ पग कैसे ?
जब सबमें तू पारथ चशमेतू, फिर हो रहे हो सुभग कैसे ?
कैसे घोर, भू, नभ गिरी तारे, सबका कैसे किया निर्माण ॥1 ॥
किस तरह सृष्टि की तूने, रचना करी हे भगवान ।।

ग्रीष्म, बरसात शीतवात, कैसे त्री रूप ऋतु बंटवारा है।
हो ग्रीष्म तपन, सिलगे बदन, ना इन्धन जला भट्टारा है।।
वर्षा से जल, भरे आशय थल, कहां नभ में निधि तुम्हारा है।
आवे शीत लहर, मचे हिम कहर, कंही बर्फ का ना भण्डारा है।
क्या लेह लिया जिससे देह किया, आकार रूप न्यारा-न्यारा है।
वनस्पती, औषध, पत्रक फल, रस गुण न्यारा-न्यारा है।
कोई जीव ऊपर, कोई जलथल अन्दर, किसी का वास किनारा है।।
उर्ध्वा जीव पलना रुके, धुर्वा कैसे लुके, बिना सांस ये प्यारा है।
भोग वस्तु पै, सूक्ष्म जन्तु, कैसे आते बिन नाक नेत्र व कान ॥2 ॥
किस तरह सृष्टि की तूने, रचना करी हे भगवान।।

यह बिन सांचा भवन रूपी ढांचा, तूने अजब बनाया है।
दो हैं खम्बे सुदृढ़ व लम्बे, ऊपर कैसा तन रथ बना या है।
नौ दरा मन्दर, कोष्ठ है अन्दर, कितु पन्छी मौन बसाया है।

दो दृश्य तन्त्र दो श्रवण यन्त्र, एक मुख से जावे खाया है।
दो सांस रन्ध्र, दोमल यन्त्र, शेष जाता बाहर कराया है।
किया कमाल ध्यान, उचित स्थान, सम्मुख सेवार्थ बनाया है।
द्रव्य सूंघ बाद, जिव्हा से स्वाद, बत्तीस शस्त्र से जा चबाया है।
भण्डारे में रस रक्त बने, वसादि हरवक्त बने, रथ जिन से जा चलाया है॥
अथर्व वेद की कहे रिचा, कैसे ये शरीर रचां, कौन शिल्पी है महान ॥3॥
किस तरह सृष्टि की तूने, रचना करी हे भगवान।

ऋषि, मुनि, देव ब्रह्मपुरी देह, वेद शास्त्रों में बताया है।
रख सूक्ष्मजान, कर रथ संज्ञान, आत्मा को सवार बनाया है॥
दो इन्द्री मन, बुद्धि, पांच ज्ञान शुद्धि, सप्त ऋषि वास कराया है।
आत्मा से तेरा सम्बन्ध, यही साधना प्रबन्ध मन्दिर यह बनाया है॥
रक्षक, प्राण, सुखदाता, दुखः हर्तातू, सविता पालक शुद्ध छाया है।
अर्पण, पूज्य योग्य आप, ओजतेज दात, सुपंथ दृश्य बताया है॥
तेरे अनेकों काम, ऐसे ही असंख्य नाम, सर्व व्यापक तू ज्योति छांया है।
दिये तूने कितने सांस, कब ले जो पास अजब ये गणित बनाया है।
करे "श्यामसिंह" कैसे वर्णन, हुये ना किसी को दर्शन ऋषि थक गये करते ध्यान ॥4॥

किस तरह सृष्टि की तूने, रचना करी है भगवान।
युगों-युगों के भी जन्म मरण से ना उतार सके अहसान॥

ईश्वर कल्याण करता है

वह परमपिता परमात्मा आत्मा से हर समय सम्बन्ध रखता है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवे सम्मुल्लास में दिया है कि मनुष्य जब भी किसी काम में इन्द्रियों को लगाता है, उसी क्षण में आत्मा के भीतर बुरे काम में भय व शंका होती है और अच्छे कार्यों में अभय, आनन्दोत्साह उठता है। इससे सिद्ध हुआ परमात्मा आत्मा के माध्यम से संकेत करता है, हर समय ध्यान रखता है। अतः बुरे कर्म नही करने चाहिए।

"भजन"

अब तो यत्न कर ले

अब तो यत्न करले, प्रभु का भजन करले।
मिट जायेंगे पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले ॥टेक ॥

मानव का यह चोला, बार-बार नहीं मिलता।
पतझड़ हो जावे तरू, तो फूल नही खिलता ॥
टू फोर-डी से बचा मूल को, गुलज़ार चमन करले ॥1 ॥
मिट जायेंगे पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले ॥

मुख से सदा तुम अपने, सदा सत्य मधुर बोलो।
जो तय करके हो आये, उसके अनुसार तौलो।
"ब्रह्म वर्चस्" ध्यान करके, निर्भिक वचन करले ॥2 ॥
मिट जायेंगे पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले ॥

मेधा को स्वच्छ करके, सुनों पढ़ों वेदों की वाणी।
मन को एकाग्र करके, बन जा तू आत्म ज्ञानी ॥
ध्यान रहे ब्रह्म रन्ध्र में, ऐंसा ही यत्न करले ॥2 ॥
मिट जायेंगें पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले।।

विद्वानों की टोली में, लगा समय अपना।
तब हो जायेगा शुद्ध ज्ञान, है संसार एक सपना ॥
मिट जायेंगे दोष सारे, शुद्ध यह तन-मन करले ॥4 ॥
मिट जायेंगे पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले।

भर्गो: देवस्य की हो भावना, औरों के भी काम आओ।
हो आनन्द की पूर्ण कामना, धर्मार्थ नाम पाओ।
"श्यामसिंह" दिव्यानन्द गुरू शरण का, अबसे प्रण करले ॥5 ॥
मिट जायेंगे पाप सब तेरे, शुद्ध अपना मन करले ॥

भजन

कभी यह अतिथि आये - कभी चला जाये

(तर्ज : सारी-सारी राते)

कभी ये अतिथि आये, और कभी चला जाये रे ॥टेक॥
ये आत्मा है मुसाफिर, और संसार ये सराये रे॥
जिसने भी आकर यहां, धर्म नियम न ही जाना।
गर्व में आकर के किया, दूसरों को है सताना।।
नज़रों से उस रखवाले की, वह बच नहीं पाये रे॥1॥
कभी ये अतिथि आये, और कभी चला जाये रे॥
धर्मशाला में तुझे प्रभु ने, बड़े प्यार से है ठहराया॥
लेकिन सह भागी संग में, तूने मत भेद है बनाया॥
देखकरके प्रबन्धक तुझकों, देगा बाहर कराये रे॥2॥
कभी ये अतिथि आये और कभी चला जाये रे।।
है अभी यह कुछ शक्ति यूंही समय क्यों गंवाये।
बुढ़ापे के समय वरना, क्षीण हो पछतायें।।
गर्व करके अब हर समय, क्यों फिरता मुस्कराये रे ॥3॥
कभी ये अतिथि आये और कभी चला जाये रे॥
दिये हैं सांस गिनती के, अन्त मिले ना उधारे।
जब निकलेंगे दम, घर के ही, तुझे बिस्तर से उतारे॥
चार बन्धु पड़ा अर्थी पै, उठा कर के ले जाये रे॥4॥
कभी ये अतिथि आये, और कभी चला जाये रे॥
जैसा भी समय है बीता, क्षमा मांग पछताले।
योग के यम-नियम अब, तू मन को चलाले॥
मुक्ति के पथ ''श्यामसिंह'' गुरू दिव्यानन्द बताये रे॥5॥
कभी ये अतिथि आये और कभी चला जाये रे॥
ये आत्मा है मुसाफिर और संसार ये सराये रे॥

मुक्ति हितार्थ

मोक्ष की प्राप्ति बन्धन, लोभ मोह व्यसन, क्रोध आदि से छुटकारा पाकर होती है। सब चिन्तायें त्याग कर, एकाग्र मन करके, मन आज्ञा चक्र (दोनों भंवरों के बीच नासिका के ऊपर) में लगाकर भक्ति करने से, ध्यान में आकर होती है। ईश्वरोंपासना ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, योग़ाभ्यास (यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि) एवं धर्मानुष्ठान विद्या प्राप्ति, सत्संग, पुरुषार्थ स्वास्थ्य आदि ये मुक्ति के साधन हैं। इसके विपरीत जो मानव रहेगा, वह अस्वस्थ तो रहेगा ही। उससे ईश्वर अप्रसन्न, होगा तो मुक्ति कैसे प्राप्त होगी। (वेद योगामृत साभार से)

– डा० श्याम सिंह "आर्य"

"भजन"

दो घड़ी ईश्वर का कर ले जाप तू।
मिटा लेगा फिर खुद ही, अपने पाप तू॥

ईश्वर के गुण वाचक, शब्दों का मनन करो।
तस्यः वाचक् प्रणवः रटने की लग्न करो॥
मन इन्द्रियों के हो बसमें, पा रहा अन्धकार है।
भला सफलता तभी तो हो, उन पर बने अधिकार है।
प्राप्त कर लेगा स्वयं ही , मुक्तिपथ अपने आप तू॥
मिटालेगा फिर खुद ही, अपने पाप तू।

उपासनार्थ कर योग के चार अंगों का अभ्यासतू।

यम-नियम, आसन प्राणायाम, इनसे होगा पास तू॥

अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पालन कर।

शौच, सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश प्राणिधान चालन कर॥
आसन प्राणायाम नित्य कर्म से, शरीर मन कर साफतू॥2॥
मिटा लेगा फिर खुदही, अपने पाप तू॥

ब्रह्म मूहर्त में एकान्त पलथ बैठ, मन आज्ञा चक्र में लगाओ।
ईड़ा पिंगला में ध्यान लगा सुषुम्ना ध्यान फैलाओं।।
उसी स्थान ओउ्म शब्द, लिखने जैसी रीति बनाओं।
कष्ट क्लेष लोभ मोहादि, बुद्धि से बाहर की नीति बनाओ।
चाहे ज्ञान "श्यामसिंह" ले ले, गुरु दिव्यानन्द से प्रताप तू॥
मिटा लेगा फिर खुद ही, अपने पाप तू।।

॥भजन॥

जन जन में बसा प्रभु

जन-जन में बसा प्रभु देख रहा, चाहे धर्म करो, चाहे पाप करो।
कोई उसके ध्यान से बचा ना रहा, चाहे छुपकर के भी आप करो॥
मनुष्य देह दिया है ईश्वर ने, तुम्हें शुभकर्म करने के लिए।
कुछ आगे काम आवें, कुछ गलत हैं भरने के लिए॥
जीवों के आवागमन का चक्र, चाहे तुम ना पश्चाताप करो॥1॥
मनुष्य शुभ धर्म करे, आदेश था मनु योनि पाने में।
मन इन्द्रियों के अधिकार में हो, लगा दुष्कर्म कराने में।
उस ईश्वर का न्याय बड़ा, ध्यान चाहे कितना ना आप करो॥
जन-जन में .....

एकान्त देख बुरा कर्म करे, उसकी तो नजर में आना है।
उन दोषी इन्द्रियों को प्रतिफल, अगली योनि में पाना है।।
नहीं अन्य दण्ड यही नियम कड़ा, फिर चाहे कितने प्रलाप करो॥3॥
जन-जन में ....

नही चलती है उसके यहां, शिफारिश रिश्वत चालाकी।
उसके यहां लेन-देन की बन्दे, रीति बड़ी अजब व बांकी।।
परिणाम का खाता वहां है खुला, चाहे कितना तौल नाप करो॥4॥
जन-जन में ....

किसी जीवन में कर्मो का फल, कभी माफ नहीं होता है।
दिव्यानन्द ऋण तारे ना "श्याम सिंह" दामन साफ नहीं होता है॥5॥
याद रक्खों ये नियम सदा, चाहे छुपकर भी आप करो॥5॥
जन-जन में बसा प्रभु देख रहा, चाहे धर्म करो चाहे पाप करो।।

सर्व कर्मणा तमभ्य सिद्धिं विन्ह तिमानव: (गीता 18/46) योगेश्वर श्री कृष्ण जी कहते हैं कि, अपने कर्म से भगवान की पूजाकर, कर्म ही पूजा है।

"भजन"

उस ईश्वर की महिमा बड़ी

उस ईश्वर की महिमा बड़ी, स्मरण करले नित्य दो घड़ी ॥टेक॥
कूंच की होजाये कब घुढ़चढ़ी, यम सेना है हर वक्त खड़ी ॥

पिछली करनी का शुभ फल यह, तुझे मनुष्य का चोला मिला।
आवागमन तो होना ही है, बन्द हो वे ना ये सिलसिला ॥
है वेदों में सिद्ध हेतु रिचा लड़ी, यम सेना है हर वक्त खड़ी ॥
उस ईश्वर की है महिमा बड़ी, स्मरण करले नित्य दो घड़ी ॥

इस यौवनास्था पै ना गर्व कर, कुछ समय में रुक जायेगी।
फैला सीना सिकुड जायेगा, रीढ़ गर्दन भी झुक जायेगी ॥
सहारे को लेके चले लठखड़ी, यम सेना है हर वक्त खड़ी ॥2 ॥
उस ईश्वर की है महिमा बड़ी, स्मरण करले नित्य दो घड़ी ॥

यह बीता कल तो बचपन था, अगला है वृद्धापन होना।
यही बीच दिन है जवानी का, सरल इसी में योग भजन होना ॥
शुभ कर्म-धर्म की आज ही घड़ी, यमसेना है हरवक्त खड़ी।
उस ईश्वर की है महिमा बड़ी, स्मरण करले नित्य दो घड़ी।

जीवन तेरा यह अनमोल है, जो मोक्ष का है द्वार मिला।
इस मोह माया से मन को हटा, प्रभु से आत्मा का तार मिला।
"श्याम सिंह" पाओ दिव्यानन्द से जड़ी, यम सेना है हर वक्त खड़ी।
उस प्रभु की है महिमा बड़ी, स्मरण करले नित्य दो घड़ी ॥
कूंच की हो जाये कब घुड़ चढ़ी, यम सेना है हर वक्त खड़ी ॥

"भजन"

जप तप ना किया तूने

जप तप ना किया है तूने, प्रभु नाम का।
सच्चिदानन्द, सर्वाधार, प्यारे अन्तर्याम का॥
बचपन का जीवन तूने बिता, खेल में दिया।
बच्चों की साथ लग, बिता धकापेल में दिया॥
सीखा नहीं था तूने कुछ, ज्ञान काम का ॥1॥
सच्चिदानन्द सर्वाधार प्यारे अन्तर्याम का॥
पठन नाम मात्र ही किया, केवल ही स्कूल में।
अन्यसमय कुसंग में रहा, होकर के भूल में॥
छोड़ा था योग व जाप, स्वाध्याय काम का॥2॥
सच्चिदानन्द, सर्वाधार, प्यारे अन्तर्याम का॥
ज्वानी में गर्व कर, मौज लेने में लगा।
सौंक से व्यसन द्रव्य, नित्य ही लेने में लगा।।
फिक्र ना किया कुछ भी तूने, उधार नाम का॥3॥
सच्चिदानन्द, सर्वाधार, प्यारे अन्तर्याम का॥
गलत ही कर्म तूने, किये हैं उमर भर।
बगीचे में बबूल पेड़, उगाये उमर भर॥
ऐसे कौन दे देगा तुझे, फल आम का॥4॥
सच्चिदानन्द, सर्वाधार, प्यारे अन्तर्याम॥
दो भाग आयु तूने, व्यर्थ गंवाई है।
अब करले योग कर्म, अभी तो तिहाई है॥
ऐसे ना मिले "श्याम सिंह" पथ दिव्य धाम का॥5॥
सच्चिदानन्द, सर्वाधार, प्यारे अन्तर्याम का॥

"भजन"

हो जायेगी वसूल मेहनत

हो जायेगी वसूल मेहनत प्रभु शरण आने के बाद।
खर्चा भी पूर्ण होता ही है, फसल पक जाने के बाद॥
जब तक आलस्य है, कुछ नहीं कर पायेगा।
मेहन्ती ही पाते सुफल, समय पर बोने के बाद ॥1॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण आने के बादं।
मन से जो प्रभु के पुजारी डर कभी पाते नहीं।
आनन्द मिलता है सदा, पूर्ण धारणा के बाद ॥2॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण आने के बाद॥
लोभ, मोह गर्व जो ना हटे, ध्यान ना लग पायेगा।
स्थिर हो जायेगी ध्यान मुक्ति, दोष मिट जाने के बाद ॥3॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण आने के बाद॥
गुल पुष्प को भी तनिक देखो, आई कैसे खुशबु बहार।
कब तलक कांटों में सोया, डाल पर आने के बाद ॥4॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण आने के बाद॥
अन्धकार की रात देख भौंरा ना होवें उदास।
खिल जायेगी वह बन्द कलियां, भौंर फटने के बाद॥
हो जायेगी मेहनत वसूल, प्रभु शरण आने के बाद॥
गाढ़े दूध टोहकर देखें, कुछ भी दीखेना खास।
घी अवश्य ही मिल जाता, मथनी चलाने के बाद ॥6॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण में आने के बाद॥
गर्व त्याग ईश्वर प्राणी धान कर, मन सर्व विषय रहित बना।
दिव्यानन्द हो प्राप्त श्यामसिंह, थोड़ा कष्ट सहने के बाद ॥7॥
हो जायेगी वसूल मेहनत, प्रभु शरण आने के बाद॥
खर्चा भी पूर्ण होता ही है, फसल पक जाने के बाद॥

भजन

करे पुरूषार्थ जो मानव

करे पुरूषार्थ जो मानव, उसे इन्सान कहते हैं।
आये काम अन्यों के दुख में, उसे भगवान कहते हैं॥
कभी अमीर है बहुतेरा, कभी होता निर्धन है।
कभी विपदा, कभी दुख, कहते इसी को जीवन है॥
जो कष्टों में भी ना घबराये, उसे इन्सान कहते हैं॥ आये...
यह जीवन जंजाल सी वण है, कभी झंझट कभी ठोकर।
कोई खुशियों में रहता है, कोई रहता गमी होकर॥
जो विपत्ती में भी हंसता है, उसे इन्सान कहते हैं॥2॥
कष्ट हानि जो होती है, वह पथ भी बताती है।
यह मानव तो अल्प ज्ञानी है, त्रृटियां तो हो ही जाती हैं।
किये दोषों में जो पछतावे, उसे इन्सान कहते हैं॥3॥
जो उन्नति अपनी ही करता है, उसे तो स्वार्थी कहते हैं।
जनता के काम जो आवे, उसे ही पुरूषार्थी कहते हैं॥
त्यागा था धनथान ऋषि ने, उन्हें भगवान कहते हैं॥4॥
कमा खाकर अकेले ही, सदा जो पोषण करते हैं।
यूं भरने को तो जगत में, पेट पशु पक्षी भी भरते हैं॥
जो भूखों को भी खिलाये, उसे इन्सान कहते हैं॥5॥
स्वार्थ भाव मिटाकर के, जो प्रेम पथ पर हों।
भाव से रहे जो इदन्नमम् के वह प्रभु पथ पर हो॥
जो करता मदद दीन हीनों की, उसे इन्सान कहते हैं॥6॥
कर्म लोभ में होकर जो हित हनन करे, औरों का।
प्रभु बैरी होकर के होगा, अग्रयोनि में ढौंरों का॥
रहेगा "श्यामसिंह" दिव्य शरण में, उसे इन्सान कहते हैं॥7॥
आये काम अन्यों के दुख में, उसे भगवान कहते हैं॥

"गति फल"

योनियों में आवागमन

वयक्तव्य : हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि गुह्यं ब्रह्म सनातनम्।
यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति गौतम॥
योनि मन्य प्रपद्यन्ते शरीर त्वाय देहिनः।
स्थाणु मन्येऽनु संयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्॥

अर्थात : नचिकेता को यम ने यह उत्तर दिया था कि, मरने के बाद यह शरीर तो नष्ट हो जाता है, परन्तु आत्मा बचा रहता है। उसकी क्या गति होती है वह ज्ञान कर्म, धर्म फलानुसार जंगम (मनुष्या,पशु,पक्षी) आदि योनि में जाते हैं। दूसरे स्थावर (पेड़ वनस्पति आदि) योनियों में जाते हैं।

"भजन"

आवागमन (तर्ज : रेशमी सलवार-कुर्ता जाली)

अब करले कुछ सुधार, अगर तुझे कुछ पाना है।
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥टेक॥

दो भागों में जीव का, यह, हो रहा है बंटवारा।
कर्तव्य भोग मनुष्य, भोग में जंगम, स्थावर सारा॥
तुझे कर्तव्य कर्म भी निभाना है॥1॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥

थी प्रभु शर्त इस योनि में, इन्द्रियों पै अधिकार है करना।
तूने अधीन हो इन्द्रियों के, किया शुरू दुराचार है करना॥
ना सोचा धर्माचरण पै आना है ॥2॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है।।

किया पाप जिस इन्द्री से, वैसी ही योनि में जावे।
मानों किया दुष्कर्म दृष्टि से, नेत्रहीन योनि में जावे॥

होकर सुधार फिर, यही योनि पाना है।
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है।।
मनुष्य योनि में आकरके, अगर फिर बदहोशी करता।
करें पाप कर्म सब इन्द्रियों से, तो सबको दोषी करता।।
सुधार हेतु इन्द्री हीन योनि में जाना है।।4।।
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है।।
वैदिक धर्म में दण्ड विधान यही, इन्द्रियों का सुधार करना।
फिर दी जाती इसी योनि में, अबके शुद्धि अपार करना॥
दोषी जो फिर भी रहेगी, वनस्पति आदि में जाना है॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥
आवागमन अच्छी बुरी योनि में, ज्ञान कर्मानुसार होवे।
करना अधीन इन्द्रियों को, जो अब निर्विकार होवे॥
इन्हें अब मनन कर दोषों से बचाना है॥6॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥
यह आवागमन की शिक्षा, तुझे अमूल्य पाठ पढ़ावे।
जो प्रसन्नता से सहे कष्टों को, पाप का भार हटावे॥
अब उपनिषद् रीति पै आना है॥7॥
है आवागमन का चक्र, बदल योनि पाना है॥
सत्व, रजस, तमस, धातु, इनसे यह शरीर बना है।
सत्व प्रकाश आत्मिकदाता, रजस से क्रूर बना है॥
तमस से अन्धकार इसे हटाना है॥8॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥
अब भौंरा बनजा प्यारे ना मक्खी हो फिर गलियारे।
"श्याम सिंह" संकेत शास्त्रों के, दिव्यानन्द के हों मतवारे॥
करना नियमों का उपयोग जो मुक्ति पाना है॥
है आवागमन का चक्र, बदल के योनि पाना है॥
अब करले कुछ सुधार, अगर तुझे कुछ पाना है॥

"भजन"

आत्मा से परमात्मा

सदा ही रहता है, आत्मा में परमात्मा।
कोई जाने ना माने तो, वह क्या करें।।

कण–कण में रमा है वह अन्तर्यामी।
कोई माने ना माने, तो वह क्या करे ॥1 ॥

एक अभिमान का है बीच में परदा पड़ा।
लोभ और मोह छाया है तेरे भीतर।
त्यागे ना इसे कोई होता नहीं भला॥
कोई माने ना माने, तो वह क्या करे ॥2 ॥

भू नभ सितारों में है उसकी चमक।
अन्न जल पवन में है, उसकी रमक।।
चल और अचल भी, उसके दिये हैं।
कोई माने ना माने, तो वह क्या करें ॥3 ॥

तन की शुद्धि स्नान से, मन की होवे ज्ञान से।
सत्संग से हो सम्बन्ध , प्रीति हो भगवान से॥
सदा सुख प्राप्त होवे, गुरू दिव्य के ज्ञान से॥
कोई माने ना माने तो वह क्या करें ॥4 ॥

राह तन रथ प्रभु ने, तुमको दिया।
बदल में उसने, कुछ भी ना लिया॥
चलाने को ''श्यामसिंह' मेधा चश्मा दिया॥
कोई माने ना माने तो वह क्या करें ॥5 ॥

"भजन"

अभागा दुभाग्य कौन?

(तर्ज : सारी-सारी राते तेरी याद)

अभागा किसी को नहीं, उस ईश्वर ने बना या है।
सोच विचार हेतु दी है बुद्धि फिर भी समझ ना आया है॥
प्रातःकाल नित्य उठ, जो प्रभु का ना ध्यान करता।
आलस्य कर देर से उठे, बड़ो का ना सम्मान करता॥
यह था समय सद्ज्ञान का, फिजूल जो बिताया है॥1॥
सोच विचार हेतु दी है बुद्धि, फिर भी समझ ना अया है॥
आनन्द सुख प्राप्त होवे, जो यज्ञ नहीं त्यागता।
करता न ही जो तप यज्ञ, अप्रसन्न हो ईश्वर उसे त्यागता।
विशेष श्रेष्ठ पूजा यह प्रभु की, क्यों ना तू कर पाया है॥2॥
सोच विचार हेतु दी है बुद्धि, फिर भी समझ ना आया है॥
सत्संग की बहती जो गंगा, उससे ना अमृत पान किया।
अतिथि है प्रतिनिधि प्रभु का, उसको ना खान-पान दिया॥
बिना दान सम्मान किसी ने, कभी श्रेय ना पाया है॥3॥
बलवान, धनवान होकर भी, दीन दुखियों की ना मदद करे।
भुवः से विपरीत गर्व में होके, फिजूल खर्च की ना हद करें॥
माता-पिता गुरूजनों को, भय जो दिखाया है॥4॥
सोच विचार हेतु दी है बुद्धि, फिर भी समझ ना अया है॥
अब यही है विधि दोष पाप, त्रुटि मन से बाहर करो।
गुरु दिव्यानन्द के स्वाभाव आ, "श्याम सिंह" दूर क्रूर करो॥
दुर्भाग्य से बचने का तुझे, यह पथ इक बताया है॥5॥
सोच विचार हेतु दी है बुद्धि, फिर भी समझ ना पाया है॥

गौमाता की आरती

गावो: विश्वस्य मातरः (गाय विश्व की माता है।-ऋग्वेद)

ओउ्म जय विश्व जन माता, नमो: हे विश्व जन माता।
बैल है पिता गाय माता, यह है ऋग्वेद बतलाता ॥1॥

वेदमाता, जन्मदात्री माता, भारत माता, गाय माता।
ऋषियों का सन्देश यह, चार मातायें है बताता ॥2॥

जन्मोपरान्त नव निहाल का, कोई द्रव्यना अन्य होता।
मधु बून्द मिला गौ दुग्ध में, वह बल्य जीवण्य होता ॥3॥

भारतीय संस्कृति की दिव्यता, हो देव प्रतीतकर्ता।
मनुष्य पर है असीम कृपा आपकी, मां आरोग्य प्रदान कर्ता ॥

धातु औषध विष शोधन कर, सैकड़ों रोगों को है हटाता।
है अमृत तत्व मूत्र तुम्हारा, असंख्य योगों को बनाता ॥5॥

पञ्च तत्व ही तुम्हारे, हैं द्रविणं परिपूर्ण कारी।
कीट रोगों से बचे फसलें, तस्य मूत्र है गुणकारी ॥6॥

यज्ञ पूजन जन्म मरण में, पञ्च तत्व से उद्धार होवे।
गौदान पश्चात् होवे कन्यादान, तब विवाह संस्कार होवे ॥7॥

राष्ट्र समृद्धि जन शान्ति हो, सब गौ दुग्ध घृतपान करें।
आपसी कलह भेद-भाव हटे, "श्यामसिंह" यह विनय गान करे ॥9॥

ओउ्म जय विश्व जन माता, नमो: है विश्व जन माता ॥
बैल है पिता, गाय माता, यह है ऋग्वेद बतलाता ॥

"गीत"

गौ संवर्धन

गौ घर–घर स्थापित कर, मां का आशीष पाना है।
गौ पालन संवर्धन करके,
उन्नत राष्ट्र बनाना है।
छोड़ दिया जब गौ पालन तो,
दशा हमारी दीन हुई
गौवों की दुर्गति हो गई,
उर्वरक शक्ति क्षीण हुई।
हुआ प्रदूषित अन्न, वायु, जल,
स्वास्थ्य दशा हीन हुई।
अब मिलकर इसे बचाना है॥1॥

गौपालन संवर्धन करके,
उन्नत राष्ट्र बनाना है।
कहते है गौ माता की जय,
पर विक्रय कर कत्ल किया।
गोबर धन का मूल्य ना समझा,
केवल पथ का लाभ लिया।
इसीलिए सूना हर आंगन,
फिर से इसे बसाना है॥2॥

गौपालन संवर्धन करके,
उन्नत राष्ट्र बनाना है॥

"भजन"

ऐ बशर! होश कर

ऐ बशर होश कर, क्यों हुआ बेखबर।
कौन सी चीज पर तुझ को अभिमान है।
साथ जायेगी तेरे सूंई तक नहीं।
क्यों इकट्ठा किया इतना सामान है ॥टे॥

मंहगी कारें और संगभरमर की ये कोठियां।
की खडी नौंच कर दीनों की बोटियां॥
छीन कर रोटियां बद दुआयें ही ली,
किस के दिल में बता तेरा सम्मान है ॥1॥

पाप से जो तूने की सम्पत्ति खड़ी,
इस सम्पत्ति के पीछे है विपत्ति खड़ी।
पाप के धन से सुख की क्यों आशा करे।
लूटेरा तू तो ना धनवान है ॥2॥

यहां से रावण गया, और सिकन्दर गया।
हाथ खाली थे, कबर के वो अन्दर गया॥
यहां फकीरों को इज्जत मिली है सदा,
उनका ही मान है, उनका गुणगान है ॥3॥

साथ जायेगा धन व चान्दी सोना नहीं,
सोना कहता है तू सुख से सोना नहीं।
निश्चित् धन से धनवान होता नहीं।
वे धनी हैं, जिन्हें याद भगवान हैं ॥4॥

✡✡✡✡✡

वैदिक धर्म नाश प्रस्थिति

(भारत के दक्षिणी भाग में, ईसाई पादरियों ने वेदों के नाम के अपनी रीति के स्वयं ही झूठे यजुर्वेद बनाकर, हिन्दुओं को ईसाई बनाना शुरू कर रक्खा था।)

॥ भजन ॥

ऐंजी, हेंजी धर्म का, कैसा हो रहा था नाश ॥टेक॥
कैसे होगा सुधार धर्म का, ना किसी को था विश्वास ॥
वेदों के सुने थे नाम, ज्ञान में ना आये थे।
पाखण्ड ईसाई ज्ञान भर, मतपथ में चलाये थे।
रोवेर्टोंडी पादरी नाम, मछरा (मद्रास) में आये थे।
वेद गडरियों का गीत बता, बहुत के धर्म बदलवाये थे॥
पूरे मद्रास प्रान्त में प्रभाव, पड़ गया था खास ॥1॥ ऐजी...
अथर्ववेद पढ़ने को तो, गाली समझी जाने लगी।
प्राचीन आर्य भाषा तुच्छ बता, फैशन विदेशी आने लगी॥
जन्म जात दलित छुआछूत, कुरीतियां ये आने लगी।
नाबालिग बालिका भी, विवाह श्रेणी में आने लगी॥
एक दो वर्ष की शादी बाद, वे विधवा कहलाने लगी।
विधवा नियोग रीति ना थी, बलात् प्रयोग की जाने लगी॥
था जबरदस्त अत्याचार वह, ससुर रोक सके ना सास ॥2॥ऐजी...
जन्म जाति प्रचलित कर, सभी का अपमान किया।
काज खान-पान पृथक, छुआछूत, कुवि धान किया॥
क्षुद्र व दलित से पृथक बड़ों में घृणा का रुझान किया।
असह्य आक्षेप करके, असंख्य को ईसाई मुसलमान किया॥
शिक्षा का अधिकार छीन, स्त्रियों को था अज्ञान किया।
पूरे हिन्दू समाज पर यह कलंक का टीका महान किया।
"श्यामसिंह" इस डूबी नैया को, दयानन्द आये थे करने पास ॥3॥
ऐजी, हेजी धर्म का कैसा हो रहा था नाश।

ऐसे में (देश धर्म के नाश समय) गीता में कृष्ण भगवान ने कहा –

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य स्थापनार्थ सर्जाम्यहम्॥ (गीता)

(जब-जब धर्म की हानि होती है और भार देश को अत्यधिक हानि, कष्ट और पाप आदि प्रभाव में ईश्वर देख लेते हैं। तब-तब सुधार, उत्थान एवं धर्म बचाने के लिए वे अपने ज्ञान से परिपूर्ण कर मानव को अवतार रूप में उत्पन्न कर भेजते हैं।) श्रीराम, श्रीकृष्ण, सन्त रविदास व महर्षि दयानन्द आदि अनेकों, देश धर्म बचाने हेतु अवतार बनके आये।

उन्होंने ज्ञान की शक्ति से ही देश व धर्म बचाने के कार्य कर देश धर्म को विनाश होने से बचाया। इसी श्रृंखला में एक भजन यह दिया है, कि महर्षि दयानन्द जी ने देश धर्म का अपार उद्धार किया –

॥भजन॥

(महर्षि दयानन्द जी द्वारा उद्धार)

ऐजी हेजी! हमारी कौन पूछता बात। हमारी कौन पूछता बात।
अगर नहीं टंकारे आती, का गुण की शिवरात॥ हमारी कौन पूछता बात।

फागुण की शिवरात्रि अगर टंकारे में आती ना।
गले का जनेऊ और सिर पै चोटी पाती ना॥
हिन्दू धर्म की यहां रहती कोई जाती ना।
दिल्ली लाल किले ऊपर तिरंगी लहराती ना।
भारत के अन्दर से आज छुआ छूत जाती ना॥
विधवा देवर बना करके, आज मंगल गाती ना।
फिर यहां रोते रोज अनाथ, हमारी कौन पूछता बात॥1॥ऐजी...

भारत वालो ये थारे सारे ठाठ जाते।
ईसाई, व मुगल तुम्हें, अच्छी तरह चाट जाते॥
लुहारों का लोहा जाता, दस्तकारों के काठ जाते।

सुनारों का सोना जाता, बनियों के बाट जाते॥

गंगा ना रहे थी माता, इसके सारे घाट जाते।
अंग्रेजों की थी योजना, नहरों में इसे बांट जाते॥
पं० मालवीय आदि उस समय, यदि संघर्ष से नाट जाते।
साधु सन्तों तीर्थो के सारे मठ माठ जाते॥
महर्षि के शिष्यों ने गंगा, बचाई थी रातों रात॥2॥ ऐजी–हेजी.....

स्वराज ही हो अपना राज, सन्देश ना सुनाये होते।
सत्तावन में मंगल पाण्डे आदि, विरोध में ना आये होते॥
आन्दोलनकारि कैसे बनते, जो शिष्य ना बनाये होते।
बालपालराय शेख, सरदार, बोषादि क्रान्ति ना लाये होते॥
विरोध का ना होता संघर्ष, यहां से अंग्रेज ना सफाये होते।
राष्ट्र ना स्वतन्त्र होता, झण्डे तिरंगे ना लहराये होते॥
इतिहास कहें "श्यामसिह" देखो, सब ये ऋषि की करामात॥
ऐजी हेजी! हमारी कौनपूछता बात।
अगर नहीं टंकारे आती, फागुण की शिवरात॥ हमारी कौन...

"भजन"

महर्षि दयानन्द का आभार

वेदों का बिगुल सारे विश्व में, सुना दिया ऋषि दयानन्द ने।
सब जगह परओइ्म वर्चस्व, फैला दिया ऋषि दयानन्द ने॥

ज्ञान व आर्ष पथ पर, अति घोर अन्धेरा था छाया।
ज्ञान ज्योति प्रसारित कर, प्रकाश जग में फैला दिया ऋषि दयानन्द ने॥1॥

यहां यवन, ईसाई थे आये, अपने ही मत पथ चलाये।
विदेशी धर्म खण्डन कर, शुद्ध ज्ञान को फैला दिया ऋषि दयानन्द ने॥2॥

ये फर्जी बता वेद बहकाये, अपने थे बना चलाये।
सबको वैदिक धर्म पर चलने का, सुपथ बता दिया ऋषि दयानन्द ने॥3॥

आर्य भाषा पोशाक तुच्छ बताई, विदेशी फैसन भाषा थी चलाई
स्वदेश रीति सिखाकर रिवाज चला दिया ऋषि दयानन्द ने ॥4 ॥

जन्मजात, छुआ छूत कीं खाई, कुरीतिया थी हर जगह छाई
हो परस्पर प्रेम हैं सब ईश पूत, समान करा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥5 ॥

नाबालिक कन्या की होती शादी, था नियम करना बरबादी।
विधवा होने पर होता बलात्कार, नियोग रीति से हटा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥6 ॥

स्त्रीयों को शिक्षा अधिकार नहीं था, अज्ञान से आदर व्यवहार नहीं था।
हिन्दुओं पर था महान कलंक, मिटा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥7 ॥

नियम था दलितों को शिक्षा ना हो जानी, सब बन रहे थे अज्ञानी।
राजाओं से वह नियम तुडवा, सबको शिक्षित बना दिया ऋषि दयानन्द ने ॥8 ॥

वैदिक गुरूकुल, विद्यालय खुलवाये, असंख्य राष्ट्रभक्त बनाये।
"श्यामसिंह" स्वराज्य सन्देश फैलाकर, देश आजाद करा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥9 ॥

वेदों का बिगुल सारे विश्व में सुना दिया ऋषि दयानन्द ने ॥

पीछे भी दिया गया है कि महापुरूष उत्पन्न ही तब होते हैं, जब उनकी उत्पत्ति की आवश्यकता देश में पूर्ण रीति से अनुभव होने लगती है। स्वामी दयानन्द जी का ऐसी ही स्थिति में आविर्भाव हुआ (पीछे दिया है) यह जानकारी कराने हेतु उन युग-निर्माता, धर्मसुधारक, उद्धारदाता महर्षि दयानन्द "सरस्वती" जी की जीवन कथा संक्षेप में लिख रहा हूं।

महर्षि दयानन्द जी का जीवन इतिहास

दोहा : इन तुच्छ शब्दों को मेरे, सुनिये करके ध्यान।
ऋषिवर की सूक्ष्म कथा, मैं करता हूं बखान॥

राधेश्याम तर्ज

गुजरात प्रान्त में बसा हुआ, एक छोटा सा है टंकारा ग्राम।
1824 में ब्राह्मण करसन घर, जन्मे बालक मूल शंकर था नाम॥
आठ वर्ष की आयु में हो गया उपनयन, कर लिया कण्ठस्थ यजुर्वेद सार।
चौदह वर्ष की आयु, एक दिन विशेष आ गया शिवरात्रि त्योहार॥
ब्रत रखवाकर इन को भी साथ, ले गया शिव मन्दिर में परिवार।
कीर्तन जागरण कर परसाद चढ़ाया, शिव मूर्ति पर भरमार॥
सब सो गये थे जागे रहे, करने को दर्शन, शिव की इन्तजार।
मूर्ती चढ़ खाया प्रसाद एक चूंहे ने, और बहादी मल मूत्र की धार॥
मन उबरा जगाया पिता को, सब पाखण्ड वृत्तान्त बताया है।
भला ये कैसे हरेगा दुख औरोंके जो अपनी ही रक्षा ना कर पाया है॥
प्रण किया ढूंढूगा सच्चे शिव को, तब ही मन से निकलेगी भ्रान्त।
पर दो वर्ष बाद ही बहन व चाचा का हो गया अचानक था देहान्त॥
इस घटना से हुआ और भी विचलित कभी तेरी भी मृत्यु आनी है।
घर पर रहना बिल्कुल ही व्यर्थ, अब मृत्यु पर ही विजय पानी है॥
बाइस वर्ष की आयु में ही, तब घर से ही निकलना ठान लिया।
ब्रह्मचर्य दीक्षा करके ग्रहण, अनेकों शास्त्रों का ज्ञान लिया॥
सन्यास दीक्षा की प्राप्त पूर्णानन्द से, स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम लिया।
योग तपस्या, शास्त्र ज्ञान ले कर, पन्द्रह वर्ष भ्रमण अनेकों धाम किया॥
उन्हें ज्ञात हुआ मथुरा में है विद्, तेजस्वी गुरू बिरजानन्द उनका नाम।
नवम्बर साठ में वहां जा पहुंचे, दर पर खड़े हो करके किया प्रणाम॥
गुरूजी बोले, कौन हो तुम, और तूने कैसे मुझे जगाया है।

ऋषि बोले, कौन हूं मैं यही चाहूं जानना, इसलिए गुरुद्वार खटकाया है॥

समझ गुरू ने इन्ही शब्दों को, उन्हें प्यार से उचित स्थान दिया।
वेदों की कुञ्जी व्याकरण, और सभी वेद शास्त्रों का ज्ञान दिया॥
एक दिन किसी त्रुटि पर गुरूने सख़्त डंडे से करदी पिटाई थी।
अपनी चोट पर ना कियां ध्यान, गुरूजी की ही हथेली सहलाई थी॥
शिक्षा पूर्ण होने पर जब इनकी, गुरू से होने लगी विदाई थी।
ये थे खाली मांग ली दक्षिणा, मांग भिक्षा से लौंग थमाई थी॥
गुरूजी बोले! देख प्रिय दयानन्द तुझसे ऐसी मैं दक्षिणा ना चाहूंगा।
सारा जीवन कराया वेदार्पण, मैं आर्ष धर्म प्रचार कराना चाहूंगा।
यह है गुरू जी तन-मन आपका, व्रत लेकर के शीश झुका दिया।
जीवन सारा फिर अपना ऋषि ने, गुरू शिक्षा प्रचार में था लगा दिया॥
चार वर्ष तक सभी तीर्थ नगरों में, वेद प्रचार शास्त्रार्थ चलाया था।
सन सडसठ के महाकुम्भ पर पाखण्ड खण्डनी ध्वज हरिद्वार जमाया था॥
कुम्भ समापन पर गंगातट पर, भ्रमण करते सब नगरों में वेद प्रचार किया।
काशी नरेश के बुलाये पाखण्डियों का शास्त्रार्थ करके प्रहार किया॥
कर्णवास में एक संस्कृत विद्वान, इनसे शास्त्रार्थ करने था आया।
तर्क फेल हुये मूर्ति पूजा के उसके, स्वामी को था गुरू मनाया॥
एक बार राव कर्ण सिंह ने तलवार, ऋषि पर था वार करना चाहा।
दी तलवार तोड़ राव को पकड़ा, कहा सन्यासी हूं जो मुक्त करना चाहा॥
एक दिन उदयपुर महाराज ने, करी थी स्वामी से यह फरयाद।
मूर्ति पूजा का खण्डन त्याग मिलेगी, करोड़ो की मन्दिर जायदाद॥
तेरा राज्यसूक्ष्म, ईश्वर राज्य बड़ा, मैं बाहर नहीं जा सकता।
तुच्छ प्रलोभन में आ करके मैं, प्रभु आज्ञा विरुद्ध नहीं जा सकता॥
पं० इन्द्रमणि ने कहा योग्य हो मुक्ति पाओ, खंडन-मंडन तो एक बखेड़ा है।
दीनोत्थान कर ऋषि ऋण चुकाना, मेरे लिए नहीं ये बखेड़ा है।

जनवरी तेहत्तर वायसराय ने कहा, मेरे लिए विनय स्वीकार करो!

आप ईश प्रार्थना जो हो करते, अखण्ड अंग्रेज शासन उसमें शुमार करो ॥
आग बबूला ऋषि जी हो गये, कहा मैं तो उल्टी प्रार्थना करता हूं।
विदेशियों से प्रभु मुकित दे दो, स्वदेशी शासन की याचना करता हूं॥
यही बात पचहत्तर में सत्यार्थ प्रकाश में "स्वदेशी राज्य सर्वोपरी" छपाई थी।
पूरे देश में अनुयाई थे जितने भी, सबने आन्दोलन सेना बनाई थी॥
आदेश था स्वतन्त्र देश हुये बिना, राष्ट्र का उद्धार नहीं हो पायेगा।
विदेशियों की अधीनता में रह के, मानव सुधार नही हो पायेगा॥
एक बार चलते हुये देखा रास्ते में, बैल गाड़ी कीचड़ में धंस रुकी हुई॥
गाडीवान खूब मार रहा बैलों को, स्वामी की आत्मा दुखी हुई॥
मना करते रहे मारने से बैलों को, पर मालिक ने मत ठहर करी।
बैल छोड़ खुद कन्धे पर लगा, गाड़ी वह कीचड़ से बाहर करी।
एक दिन गंगा तट पर विराजमान, महिला कोई सलाकर आई है।
जिस कपड़े से वस्तु थी ढ़की, उसे ही सिर पै रखकर लाई है॥
पूछा ऋषि ने माता क्यों इस वक्त, क्या चीज फेंक तुम आई हो।
रोकर कहा बाबा! बालशव मजबूरी, जब घर में ना अन्न पैसा पाई हो॥
आधी बार रहते भूखे हैं हम, इसलिए कफन कहां नहीं हो सकी दवाई है।
एक यही धोती है मेरे पास, फाड़कर आधी में लाश यह आई है॥
इसलिए उतार के रखली सिर पर, सी करके पूरी एक इसे बनाऊंगी।
कल प्रातः पहनूंगी इसको अपनी लाज शर्म नेक बचाऊँगी॥
सुनकर के दास्तान दुखी महिला की, दिल में भारी वेचैन बन आये थे।
उस पत्थर दिल में तो इतने गम, चचा बहन मौत से भी ना आये थे॥
ऋषि ने सोचा बेकार यह जीवन मेरा, दीनों के जब तक हम दुखः हटायेंगें।
जिनसे हुआ गरीब असह देश, उन स्वार्थी शासकों को हटायेंगे॥
फिरे देते आदेश जगह-जगह, राम कृष्ण शिवाजी की सन्तान हैं सब।
कोई भी दीन, दुखी तंग ना हो, अपने क्षेत्र का करना ध्यान हैं सब॥

एक दिन एक नाई ऋषि के लिए, घर से ही लेकर भोजन आया था।

मुस्करा करके स्वीकार किया, खाने हेतु ले हाथ में उठाया था॥

कहा लोगों ने शुद्र की है ये रोटी, खाकर आप भी भ्रष्ट हो जाओंगे।
रोटी तो ये स्वामी ने कहा गेहूं की, सब खाते है कैसे भ्रष्ट हो पाओंगे।
करने को सम्पन्न देश को उद्देश्य बना, प्रशिक्षणार्थ जर्मन पत्र-व्यवहार किया।
श्रमिक कारखानों में श्रम हेतु, भारत से बुलाना स्वीकार किया॥
असंख्य लोगों ने सीखे वहां काम, मुद्रा पुञ्जी भी अधिक बढ़ाई थी।
उन्ही मेधावियों व पूञ्जी का परिणाम, देश में उद्योगों की झड़ी लगाई थी।
इच्छा बनी, हो वैदिक प्रचार विदेशों में उसका भी सुदृढ आधार किया।
अपने प्रसिद्ध शिष्य श्यामजी कृष्ण, वर्मा को विदेश कार्य प्रभार दिया॥
लन्दन में वर्मा आन्दोलन के मुख्य, सैंकड़ों कार्यकर्त्ता,नेता तैयार किये।
वीर सावरकर आदि मुख्य असंख्य शिष्य कर, स्वतन्त्रता बिगुल प्रसार किये।
स्वामी श्रद्धानन्द नारायण आदि शिष्यों ने, स्वतन्त्रता का प्रभाविक प्रचार किया॥
गुरूकुल विद्यालय स्थापित किये, असंख्य देश प्रेमियों को तैयार किया॥
नमक सत्याग्रह खादी आजादी कार्य, अब कहते हैं गांधी ने चलाया था।
लेकिन उससे तीस वर्ष पूर्व सन्देश, सत्यार्थ प्रकाश में रचाया था॥
सत्य ज्ञान मत पथ जावे सुधर, संस्कार विधि, वेद भाष्यादि ग्रन्थ रचाये थे।
अपने स्थापन्न रखने को स्थिर, पचहत्तर में बम्बई आदि आर्य समाज कराये थे।
स्थापनसमय बम्बई समाज प्रधान, उदयपुराधीश सज्जन को बनाया था।
आगरा, दिल्ली, मेरठ, अजमेर, लाहौर, स्वामी जी ने स्वयं ही समाज रचाया था॥
जौलाई 1875 में गोविन्द रानाडे ने, निमन्त्रण भेजा था पूना आने का।
उस समय चल रहा था वेद प्रचार उत्तर में, स्वीकार किया अक्टूबर में आने का॥
दो माह तक वहां मूर्ति पूजा खण्डन, अछूतोद्धार नारी शिक्षा का प्रचार हुआ।
कोई विधवा ना रहे, होवे नियोग, आदेश हजारों में स्वीकार हुआ।
रुढ़ीवादी ब्राह्मण हो गये विरोधी, अनादर करने का था विचार किया।
पाचं दिसम्बर ऋषि की थी सम्मान रैली, आगे कर गधा गर्भानन्द जैक्कार किया।

फूले महात्मा को जब ज्ञात हुआ, भारी सेवक जन लेके साथ गये।

हुआ कार्यक्रम व उपदेश सफल, पाखण्डी भागे जोड़ के हाथ गये॥

सभापद सौंपे औरों को, परन्तु सेवाप्रचार में स्वयं लगे रहे।
नियम आदेश दिये सभी सभाओं को, दीन, हीन सेवा, प्यार में लगे रहे॥
बड़ौदाधीश शियाजी गायकवाड, दूसरे नम्बर पर बम्बई सभा प्रधान हुये।
सच्चे भक्त वे थे दयानन्द के, हुये तैयार करने हेतु प्राविधान हुये॥
शिक्षा हेतु पढ़ा था सत्यार्थ प्रकाश में, बाल बालिकाओं की अनिवार्य हो।
पूरे राज्य में मुख्य बना दिया, आठ वर्ष के सर्वजाति प्रवेश अनिवार्य हों॥
दलित गरीब था भीमराव बालक, इनके ही राज्यमें वास था।
इच्छुक था बहुत वह पढ़ने के लिए, पर बन्धन में दुखी व निराश था॥
नियम बदल प्रवेश, शिक्षित कराके, राव ने नौकरी वंही लगाया था।
विदेशी उच्च शिक्षाइच्छाजान करी सहायता पोस्ट ग्रेजु. एटला डीलिट कराया था।
सब प्रेरणा थी में स्वामी जी की, समानाधिकार दें साथ लगाये थे।
श्रेय हेतु कहें भीम की जय, सत्य भूले किसने उठा जगाये थे॥
एक दिन लाहौर हिन्दू मन्दिर ठहरे, हिन्दुओं की कमी का व्याख्यान किया।
दिये निकाल मन्दिर से पण्डितों ने, डा. रहीम खाँने था स्थान दिया॥
सिद्धान्तानुसार वहां भी उन्होंने, इस्लाम कमियों का बखान किया।
डा. रहीम ने कहा स्वामी जी से, जिस जगह हो उसका ही अपमान किया॥
ऋषि ने कहा सुनो डॉक्टर जी! कुत्ता भी करे सफा मैं तो एक इन्सान हूं।
कल्याण, सत्य तो कहूंगा ही, ठहराने का मानता मैं अहसान हूं॥
काशी में एक दिन दे रहे थे भाषण, सर्प विषैला एक पण्डित ने डाल दिया।
चिल्लाकर बोला सत्य बतायेगें भोले, इस बलवान को समझो टाल दिया।
स्वामी जी ने सर्प झपट कर पकड़ा, और गर्दन रगड़कर मार दिया।
कहा कि, देखलों, कहां है भोले, तुम्हें पहना मैंने बेइज्जति हार दिया॥
संस्कृत विद्धान हीरा बल्लभ, मूर्ति भोग लगवाने आये थे पास।
सप्ताह भर पूर्ण शास्त्रार्थ चला, असफल हो करके बने थे दास॥
अनूप शहर में एक ब्राह्मण ने, विष डाल के पान में खिला दिया।
योग नौली क्रिया से महर्षि ने, वमनकर विष निकाल दिया॥
इनके भक्त एक तहसीलदार ने कहा, गुरू उसको मैं सजा दिलाता हूं।

ऋषि ने कहा मैं मुक्त कराने आया, उसको फिर क्यों बन्द कराता हूं॥

एक दिन जोध पुर राज परिवार ने, उपदेशार्थ इन्हें बुलाया था।
एकान्त विशाल भवन में उनकों, इच्छानुसार ही ठहराया था॥
राजा से स्वामी पर निमन्त्रण आया, राज दरबार में था बुलाने का।
आ रहे थे वैश्या एक देखी, खुद डोली में सहयोग दे रहे राजा भिजवाने का॥
स्वामी जी ने नक्शा था खुद देखा, ललकाार करके एक बयान किया।
राजा होते हैं समान सिहं के, कुतिया सम वैश्या पै क्यों ध्यान दिया॥
महाराजा का सिरहो गया था नीचा, पर वैश्या का चेहरा लाल हुआ।
उस समय वह वहां से चली गई, इन्हें जान से मारने का ख्याल हुआ॥
घर पर सोच विचार करने लगी, यह रोजगार कर्म का टाल हुआ।
किस विधि से यह दुश्मन मरे, सुन रक्खा था असफल विष हाल हुआ॥
सलाह कर रहे कई दुश्मन, द्रव्य ऐसा हो जो उल्टी से नहीं जा सकता।
चयन कर लिया कांच बारीक, मिला दूध में है पिलाया जा सकता॥
सोचा रसोईये से पी सकते हैं, लालच से उसे मोटा देने का ख्याल हुआ।
तैयार करा दूध में कांच पिलाया, ऋषि का हाल बेहाल हुआ॥
रसोईये जगननाथ को पैसे दे, कहके कहीं दूर पर भिजवाया था।
नाम दयानन्द काम दया के, आप मरे, पर हत्यारे को बचाया था॥
रुग्णावस्था में भक्त आबू ले गये, कुछ समय उपचार कराया था।
स्थिति जब रही अधिक बिगड़ती, फिर अजमेर केन्द्र पहुंचाया था॥
दीपावली सायं सन तिरासी को, बना खतरा शरीर हिम पात हुआ।
सब को कार्य समझा सिरा हने कर, प्राणायाम, मन्त्र, ओउ्म से देहान्त हुआ॥
इस महान आत्मा के विदा होने से, सारी दुनिया अकुलाई थी।
छा गया अन्धेरा चारों ओर, सब अनुयाईयों में उदासी छाई थी॥

॥ युग निर्माता स्वामी दयानन्द अमर रहें॥

॥ओउ्म शम्॥

सन्त शिरोमणि गुरु रविदास

॥इतिहास॥

दोहा : जनपद बनारस में बसा, मडवाडीह इक ग्राम।
मानदास-कर्मा दोनों, बसते थे निज धाम॥

(नोट: शुद्ध नाम मानदास ही था, घेरलू नाम लाड में राहुल कहते थे।)

राधेश्याम : पति पत्नि दोनों धार्मिक थे, था दोनों में अनुराग बड़ा।
चमड़े जूते का काम करें, व्यवहार था बिल्कुल सत्य खरा॥
माघ पूर्णिमा सं0 1433 को, इस घर में चन्द्र प्रकाश हुआ।
रविवार को जन्मा दिव्य पुत्र, नाम जिसका रैदास हुआ॥

॥भजन॥

(तर्ज : सारी-सारी राते तेरी याद)

वर्षों की अवधि से सभी, देखें थे नभ के सायेरे।
आये हैं इन्द्र मेघा पूर्णिमा को, मोती आज बरसाये॥टेक॥...
खुशी में मग्न हो गया, मंडुलाडीह गांव सारा।
चन्द्र देव के प्रकाश से दूर हुई तम की धारा॥
मातायें बहने सब मिलके, खुशी के गीत गायेरे॥1॥ आये...
दलित गरीब थे पिता, कच्चा छोटा सा मकान था।
था रोटी कपड़ा कठिन उन्हे, पढ़ाने का ना मिजान था॥
छोटे से ही रैदास थे पेशे में लगाये रे॥2॥ आये इन्द्र में...
एक दिन एक सन्त घर पै, लेने को आया दान था।
बचपन में ही देख मन में, सन्तों में लगा ध्यान था॥
साधु सन्तों की करनी सेवा, आदत ली बनाये रे॥3॥ आये...
साथ मे पिता के जूता बिक्री, करते हर वक्त काम थे।

किसी साधू को दान नकद, किसी को जूता दिए दान थे ॥
पिताजी ने लताड़ कहा, तूने घाटे में कराये ॥4 ॥ आये हैं...
रोजाना उसी कारण पिता इन्हें, नसीहत थे करते।
लेकिन साधु सेवा दान कर्म, ये नित्य ही थे करते ॥
"श्यामसिंह" धारणामन की छूट ही ना पाये रे ॥5 ॥आये है..

सन्त का प्रभु सेवा में मन

दोहा : सन्त सेवा और दान हित, रुक ना पाये हाथ।
हुआ चौदह वर्ष की उम्र में, विवाह लूना देवी के साथ ॥

॥भजन॥

(तर्ज : बहुत याद करते हैं प्रभु तुमको)

धर्मतप गर्भ से रैदास में समाया हुआ था।
प्यार उस प्रभु का मन में, हर वक्त समाया हुआ था ॥टेक॥
पूर्व जन्म में थे ये ब्राह्मण, गायत्री जपते हर वक्त थे।
वेदान्ती महात्मा के, सच्चे शिष्य भक्त थे।
त्रुटि कर्म फलार्थ ही, इस वर्ण में आया हुआ था ॥1 ॥ प्यार...
विवाह होकर भी मन में, वही कर्म व्यवहार था।
जो भी साधू सन्त आता, करता सेवा प्यार था ॥
कर दिया अलग पिता ने, जो मन में आया हुआ था ॥2 ॥ प्यार...
घर के पिछवाड़े में, एक, मडैया बना दे दी घास की।
अलग इसमें रहकर भी, रूचि रही दान प्रभु आस की ॥
पत्नि लूना ने भी, पतिव्रत निभाया हुआ था ॥3 ॥ प्यार उस...
मडैया निकट ही एक बना, ठाकुर कृष्ण भवन था।
जूते टांकते काम करते, मन में हर समय हरि भजन था ॥
"श्याम सिंह" प्रभु ध्यान का, व्रत मन में जमाया हुआ था ॥4
प्यार उस प्रभु का मनमें, समाया हुआ था।
धर्म तप गर्भ से रैदास में, आया हुआ था ॥

॥महातम्य वेद ज्ञान हेतु सत गुरू की खोज॥

दोहा : सन्त गुरू को खोजने चले, मन में मोद मनाये।
परमा नन्द स्वामी के आश्रम, इक दिन पहुंचे जाये॥
राधेश्याम : तप जप में लीन स्वामी, होकर के बैठे थे मौन।
रैदास कर बद्ध चरण पड़े हैं, जागृत हो पूछा तुम कौन॥
नत् मस्तक कर बद्ध प्रणाम किया, नाम बता दिया अपना रैदास।
शिष्य बन प्रभु भक्त होने की, गुरूजी यहां लेके आया मैं आस॥
स्वीकार करके विनय गुरूने, कण्ठ लगा बैठाया था सुखधाम।
महात्मा का दर्जा देकर के, रविदास कर दिया था नाम॥
पाकर शिक्षा उपदेश गुरूवरसे, पूर्ण आनन्दित हुये थे रविदास।
गुरू आज्ञा लेकर के दक्षिणा देकर, बिदाई ले आगये निजवास।
दोहा : घर आजाने पर किया, सब ने ही सत्कार।
आदर से वैदिक धर्म का, कहा करो प्रचार॥

धर्म प्रवचन : भजन

(तर्ज छुप गया कोई रे)

बताता हूं अब मैं अपने, मां भाइयों से पुकार के।
रखना है सबको अपना, वेद धर्म सुधार के॥टेक॥
धर्म है शुद्ध वैदिक सनातन, कोई झूठा ना सार है।
धन लोभ वश जो धर्म तजै, होवे ना वो पार है॥
अज्ञान छोड़ ज्ञानी होवे, नियम स्वर्ग पथ पार के॥1॥ रखना...
मन की शुद्धि ज्ञान से करना, तन की होवे स्नान से।
वस्त्रों को साफ पहनना, रहोंगे स्वस्थ सम्मान से॥
निजी स्वार्थ त्याग कर, मन करना पर उपकार के॥2॥ रखना है...
राम कृष्ण की भक्ति नित्य, करना-सच्चे मन से।
पाखण्डियों के ना कहे आना, मिलो सन्त जन से॥
कुपथ से सुपथ चलना, नियम है नरनार के॥3॥ रखना है...

शुभ कर्म से अच्छा धर्म, इस कर्तव्य को निभाना।
परस्पर प्रेम, सत्य से रहना, तज करके अभिमाना
"श्याम सिंह" कथन करें, वास्ते गुरूवचन प्रचार के ॥4 ॥ रखना है.
बताता हूं अब मैं अपने, माँ भाईयों से पुकार के।
रखना है सबको अपना, वेद धर्म सुधार के ॥
सुक्ति : वैदिक धर्म मोक्ष को दाता, मानत इसे जगत में ज्ञाता।

सन्त रविदास व कबीरदास जी की ज्ञान गोष्ठी :

सन्त वचन

जग में करे शुभ कर्म, विषय वासना त्याग।
मन में शुभ इच्छा रखो, कर ईश्वर से अनुराग ॥1 ॥
मन में सत्य शुद्ध ही धरे, करके शुद्ध विचार।
इसे शाश्वत जान लो, कि नश्वर है संसार ॥2 ॥
मन इन्द्रियां वश में रखो, विषयो को मन से मार।
एक ब्रह्म के रूप सब, मत इसको कभी विसार ॥3 ॥
व्यापक भव संसार में, सब एक आत्मा मान।
सबको देखे एक रस, बस वही है विद्वान ॥4 ॥
वस्तु सभी अभाव हैं, लेय हिरदे में जान।
त्याग भावना से करे, सब भान्ति से जान ॥5 ॥
तू-तू मैं-मैं को जहां, होय न तनिको भेद।
सर्व ज्ञान-धर्म के मूल है, सकल ग्रन्थ और वेद ॥
तर्ज रामायण : सुन हु कबीरदास चित्तलाई/सत्संगति महिमा अधिकाई।
सुनि पुलकित भये सकल शरीरा। बचन कहे यह दास कबीरा॥
दोहा : धन्य-धन्य तुम धन्य हो, हे परम भक्त रविदास।
कियो लोक कल्याण हित, तुमने सत्संग प्रकाश ॥

सन्त रविदास जी की ख्याति का विरोध :

दोहा : हुई सन्त रविदास जी की, चहुं दिशि जै-जैकार।
फैली गंगा धार पर, उनकी ख्याति अपार॥

राधेश्याम : सन्त रविदास की ख्याति सुन, पाखण्डी सब घबराये थे।
रोजगार छिनता देख करके, एकत्र हो कुछ यत्न बनाये थे॥
अपने लिए लकडी का और सन्त हेतु पत्थर देवतन बनाया था।
गंगा माता में तिराने हेतु, सन्त जी को आमन्त्रित करवाया था॥
बुलावा पाकर के पाखाण्डियों का, सन्त जी पहुंचे थे उनके पास।
उन्हें देख पाखण्डियों ने कहा, हम करते प्रस्तुत सवाल ये खास॥
सन्त बोले नम्रतासे, बताओं क्या बात आपकी महान है।
पण्डित बोले ढरै चले अब तक, आज होवे असली इमत्यान है॥
सन्त जी ने कहा कार्य है कैसा, मैं भी देखूंगा करके प्रयास।
वह ईश्वर ही सब करने वाला, उसे दिखाओ लाकर के पास॥
पण्डित लोगों ने सालिग्राम दिखाया, जो था पत्थर का बनवाया था।
गंगा माता में तिरना चाहिए, सशर्त यह था बचन भरवाया था॥

(सन्त रविदास सच्चे मन से धारणा व ध्यान स्थिति में होकर के परम पिता परमात्मा की उपासना कुछ समय तक करके, शर्त निभाने गंगा तट पर आये)

दोहा : शर्त कर्म सन्त निभाने, सुमिरन करके हरिनाम।
पाखण्डियों को दिखा दिया तिरता, वह पत्थर का सालिग्राम॥

॥ मीरा बाई का मिलना व शिष्य बनना ।

भ्रमण (तर्ज राधेश्याम)

एक बार था सोचा सन्त जी ने, जग से तो एक दिन जाना है।
अब तीर्थ स्थानों पर करना भ्रमण, कुछ सन्तों से ज्ञान पाना है॥
पहले प्रयाग और हरिद्वार गये, कर स्नान, सन्तो से ज्ञान लिया।
फिर कुछ दिन कुरूक्षेत्र रह, गढ़ चित्तोड़ प्रस्थान किया॥
चित्तोड़ गढ़ में घूमते अन्दर, आगे को राज महल के जा रहे थे।
मीरा बाई ने देखे सन्त जी, सेवा को उसके मन चाह रहे थे॥
जितने भी सन्त महल पर आते, सेवा में समय लगाती थी।
पग धोना जलपान कराना, सबको आदर से भोजन कराती थी॥
भोजन जल से तृप्त होकर, प्रस्थान हेतु कहें रविदास उसे।
परिचय लेकर के, कहा मीरा ने, शिष्य बनने की थी आस उसे॥
मीरा की विनय हठ देख करके, गुरू ने ज्ञान प्रदान स्वीकार किया।
नगर वासियों ने मीरा के विरुद्ध, इस खबर का प्रचार किया॥

पाखण्डियों की नाराजगी

नगरवासी पाखण्डियों ने सम्पूर्ण नगर क्षेत्र में खबर प्रसारित कर दी कि रानी मीरा बाई ने एक शुद्र को गुरू बना लिया है। वह नीची जाति का है और बनावटी (झूठा) साधु है। यह पूरी नगरी नहीं, पूरे राजपूतों पर प्रभाव पड़कर अपमान होगा। पाखण्डियों ने सलाह बनाई कि, चलो यह बात रानी के पति राजा साहब को बतायेगें। उन्होंने राणाजी को वे सारी बाते बता दी, सुनकर के राणा को भी क्रोध आ गया। महल में जाकर के, मीरा को नसीयत करते हैं –

राणा को मीरा से प्रश्न, उत्तर समझ, सन्त परीक्षा क्रिया

॥भजन॥ (तर्ज : सोच समझ ले पृथ्वीराज, यह [illegible] हर बार)

मैं यह पूछता हूं, मीरा बाई, तूने क्यों धर्म का है नाश किया।
यह राजपूतों का नियम नहीं, तूने जो गुरू रविदास किया॥
क्रोध में आकर राणा ने, मीरा को कठोर सुनाई थी।
कुल की शान बिगाड के मीरा, बता तेरी क्या बन पाई थी॥
ब्राह्मण आदि क्या नहीं रहे, तूने काम यह क्या खास किया॥1॥
यह राजपूतों का नियम नहीं, तूने जो गुरू रविदास किया॥
क्रोध की बातें राणा की, मीरा थी जब सुनपाई।
ईश्वर तुल्य रविदास की, उन्हें सब ख्याति बतलाई॥
पाखण्डी हैं और ये सब, सब हारे सन्त को पास किया॥2॥
यह राजपूतो का नियम नहीं, तनू जो गुरू रविदास किया॥
ज्ञान समुद्र सा भरा हुआ, जग में उनके यश छाये हैं।
सालिग्राम गंगा में तिराकर, भक्ति असर दिखाये हैं॥
जांच करलों आप भी राजा, अगर पूर्ण नहीं विश्वास किया॥3॥
यह राजपूतों का नियम नहीं, तूने जो गुरू रविदास किया॥
राजा ने सन्त सहित सब विप्रबुला, तख्त पर प्रभु मूर्ति रखवाई।
कहा जीत सत्या सिद्ध होगी, जिसके पास होगी वह आई॥
विप्र करके, यत्न सब फेल हुये, सन्त को था शर्त ने पास किया॥4॥
यह राजपूतों का नियम नहीं, तूने जो गुरू रविदास किया॥
ज्ञान शक्ति देखी राणा ने, मन का था भ्रान्त उतारा।
पश्चाताप् किया त्रुटि का, अपना दोष स्वीकारा॥
सत्य को नहीं आंच "श्यामसिंह" झूठ ने सदा ही नाश किया॥5॥
यह राजपूतों का नियम नहीं, तूने जो गुरू रविदास किया॥
दोहा : गुरू आदर देकर नृपने, दी षिप्रो को फटकार।
वृद्ध भी मूर्ख हो तिरस्कृत, विज्ञ लघु पाये सत्कार॥

कर विनय गुरू से नृपने, दिया मञ्च पर उच्च स्थान।

मीरा आदि सबही जुड़े, सुनने को ब्रह्म ज्ञान॥

मीरा को वेद का ज्ञान दे, कहके चले रविदास।

मैं कांशी नगरी जा रहा, करने को उपवास।

दी गुरू दक्षिणा नृप ने, अति किया गुरू सम्मान।

रुकसत करे सादर प्रेम से, लेकर के तत्व ज्ञान॥

गुरू गोरखनाथ सन्त जी से मिलने आये

दोहा : फैली थी चारों तरफ, सन्त की गौरव गाथ।

आये दर्श को एक दिन, गुरूवर गौरख नाथ॥

राधेश्याम : गुरू गोरखनाथ आये काशी, रविदास गुरू स्थान पर।

गले लगा कर आदर किया, उन्हें बिठलाया उच्च आसन पर॥

गोरख बोले कि, मुक्ति मिले, वह ज्ञान योग का सार कहो।

तब ज्ञान कर्म भक्ति योग, सब ज्ञान बताया था उनको॥

यह कहा कृष्ण ने गीता में, यज्ञों से ज्ञान श्रेष्ट कर है।

शुभ कार्य ज्ञान से होते हैं, शुभ कर्म से ही यज्ञ सुख कर है॥

कण्ठी माला तिलक भस्म, ये होते मोक्ष के मूल नहीं।

प्रभु न खुश होते उनसे, जो चले वेद अनुकूल नहीं॥

ध्यान योग की विधि को सुन, गोरख ने सन्त का मान किया॥

और विनय पूर्वक आज्ञा लेकर, फिर काशी से प्रस्थान किया॥

सदना कसाई दास बना

दोहा : सन्त जी की ख्याति को सुन, मिला सदन कसाई एक।

क्यों तुम वेद धर्म ही मानते, कुछ ऊँचा करो विवेक॥

वेद, कुरां, सत्य, असत्य में, सिद्धि दोनों ही करने लगे।

सिद्ध वेद को सच्चा सन्त ने किया, सदन दास बन चलते बने।

सिकन्दर बादशाह का सन्त जी पर दबाव

राधेश्याम : बादशाह सिकन्दर को लगा पता, बन गया है हिन्दू सदना हराम।
बुला तुरन्त ही पूछा उसे, किसकी सीख से तजा है इस्लाम॥
सदना बोला विद्वान योग गुरू हैं, नाम सन्त शिरोमणि श्री रविदास।
आवास है काशी में गुरू का, मुझको दे दिया ज्ञान प्रकाश॥
सिकन्दर ने मंत्री को कहकर के सन्त रविदास जी बुलाये हैं।
बोले हमतो कहते तुम धर्म तजो, सदना को हिन्दू क्यों बनाये हैं।
बहुत समय रही होती तकरारें, परन्तु सन्त जी ना हार सके।
सिकन्दर ने पांच गांव इनाम कहा, दूं जो तू इस्लाम स्वीकार सके॥

सन्तजी ने कहा –

दोहा : कोटि-कोटि हीर मिले, मिलें सहस्त्र जो नार।
वैदिक धर्म ना तज सकूं, चले गल पर भले कटार।

राधेश्याम : यह सुनकर बोल उठा, इस काफिर को गिरफ्तार करो।
नित इसे तन्हाई रक्खों, हर तरह इसे लाचार करो॥
बन्दी ग्रह में सन्तजी को, उस कट्टर शत्रु ने डाल दिया।
परवाह किञ्चित ना कर कष्टों की, जप-तप सन्त ने प्रभु ख्याल किया॥

सिकन्दर ने क्षमा मांगी-

निज सद् भक्तों से प्रसन्न हो, करें रक्षा प्रभु कठिनाई से।
सम्मुख आकर वह कुछ न करें, करते रक्षा करिश्माई से॥
अगला दिन शुक्रवार का था, उनकी नमाज़ की थी घड़ी आई।
ख्याल में आ गये थे रविदास, झुकता, धड़ाम गिरा था अन्याई॥
होश आने पर फौरन खुद ही, जेल में सन्त के पास आया।
जो भी कष्ट मैंने दिये आपको, अब क्षमा मांगने यह दास आया।
बाहर कर सन्त के पैर छूये, और शुद्ध जल से स्नान कराया था।

कर बद्ध खुद वह खड़ा रहा, सन्त को सिंहासन पर बिठाया था॥
पुनः शीश झुका कर वह बोला, गुरू कोई आज्ञा मुझे बखान करो।
धन्य-धन्य हमारा उपकार किया, अब आज्ञा शिष्यजान करो।
सन्त जी ने कहा धन एकत्र न रक्खो, सब गरीबों को बंटवा देवो।
अब जाना चाहूंगा निजी वास, मुझे काशी तक ही पहुंचा देवो॥
सब धन गरीबों को बांट रथसजा, सन्त जी काशी तक पहुचायं थे।
आराम से वे काशी पहुंचे, स्वागत कर सबने शीश झुकाये थे॥

चित्तोड़ की रानी योगवती झाली रानी शिष्य हुई

(ये चित्तोड़ की रानी झाली रानी है, इनका नाम योग ज्ञान जप ध्यान से योगवती हो गया। इनके पति का नाम राणा सांगा था। मीरा बाई इनकी पुत्र वधु थी)

दोहा : वेद ज्योति जग में जगा, युग प्रिय बने रविदास।
योगवती रानी चित्तोड़ ने, करी सन्त दर्शन की आस॥

राधेश्याम : ध्यान योग युक्ति ज्ञान से सन्तका, सब क्षेत्रों में यश महान हुआ।
मीरा के समय को पछताकर, अब बड़ी रानी को ध्यान हुआ॥
बुला कर दूत महारानी ने, सन्त का निमन्त्रण पकड़ाया था।
बैठा कर लाने को उनके, तेज घोड़ो का रथ सजवाया था॥
चला गया दूत काशी पत्र लेकर, कर नमन सन्त को पकड़ाया था
पढ़कर के पत्र निमन्त्रण का, मन गुरू का खुशी मे भर आया था॥
शीघ्र ही चल करके रथ मं सन्त जी, चित्तोड़ राजमहल पधारे थे।
राजा रानी ने चरण छू नम्न किया, खुशियो में मानों नहा रहे थे।

दोहा : नम्रतासे कर जोड़ कर, की रानी ने अरदास।
प्रभु हम पर अब दया करो, करो पूर्ण काज रविदास॥

राधेश्याम : सन्त बोले सुनो रानी, चैत्र शुक्ल चौदश को यज्ञ करना।
सब मित्र सम्बन्धी विज्ञ आवे, विधि भांति सेवा करना।
राजा रानी ने यह सुनकर, विप्रो पर सूचना भिजवाई।
सबके आदर और भोजन की, उपयुक्त व्यवस्था करवाई॥

यज्ञ कार्यक्रम

॥भजन॥ (तर्ज : सारी-सारी राते तेरी याद)

आदेश मान राजा रानी ने, विचार यज्ञ के बनाये रे।
विशेष कार्य मेल से हो, सभी विप्रादि बुलाये रे॥
यथास्थान सफाई करा, हवन है बनवाया।
क्या-क्या चाहता हवन में हैं, गुरू जी से लिखवाया॥
घी सामग्री अगर तगर कस्तूरी सभी मंगाये रे॥1॥ विशेष कार्य...
केशर चन्दन, इलायची, जावित्री युक्त सामग्री मंगाई।
समिधा आम ढ़ाक बेल गूलर बड़ पीपल की आई॥
गिलोय, दाख, मधु, बादामादि मेंवे थे मंगाये रे॥2॥ विशेष कार्य...
यज्ञ विधि अनुसार, पुरोहित मञ्च था बनाया।
सभी विप्रचारों ओर यज्ञ के, सन्त को पुरोहित बनाया॥
वेद मंत्रोंचारण से ही, महायज्ञ पूर्ण कराये रे॥3॥ विशेष...
सभी मुनि विप्रों का ही, राजारानी ने सम्मान किया।
हर्षित हो स्वयं उन्होंने, अपने हाथों से दान दिया॥
"श्यामसिंह" करें अफसोस यह, मतैक्य ना हो पाये रे॥4॥ विशेष...

विप्रों का भोजन में इकट्ठा बैठने में एतराज

दोहा : विप्रो ने चिन्तन किया, धर बुद्धि क्रोध अभिमान।
ज्ञान शून्य विह्वल हुये, यह सबका है अपमान॥
राधेश्याम : सोच लिया सबने यह, खाना मिलकर नहीं खायेंगे।
यह यज्ञ सफल न होवेगा, यश फल न इन्हें मिल पायेंगे॥

रानी का निवेदन

लग गया पता जब रानी को, विनय करने विप्रों के पास गई।
कहा भोजन कृपया सभी करें, वरना मेरी इज्जत नाश गई॥
विप्रों ने कहा ब्राह्मण, चमार है वो, साथ में ना हम आहार करें।
रानी ने नीति एक बता मनाये, आप अपनी अलग कतार करें॥
मग्न हुये विप्र यह नीति सुनकर, दूरकर पंगत खाने लगे।
सन्त रविदास ने दिखाया कौतुक, शुद्ध बुद्धि से इकट्ठे आने लगे॥

॥सन्त रविदास जी का प्रवचन॥

धर्म समातन मानन हारे। वेद शास्त्र प्राण हमारे॥1॥
एक ब्रह्म एक जीव है, एक तत्व पहचान।
ऊंच नीच फिर कौन है, देखि धरये ध्यान॥2॥
घृणा मनुष्य से करे, धर्म को त्याग।
अपने घर में स्वार्थी, लगा रहे हैं आग॥3॥
गीता में बतला गये, स्वयं कृष्ण भगवान।
सब प्राणी संसार के, समझो एक समान॥4॥
जन्म जात को छोड़ करि, करनी जात प्रधान।
इहि वेद का धर्म है, कांहि रविदास बखान॥5॥
दोहा : विप्रो ने मन में कहा, सन्त वाकई है अवतार।
सब ईश्वर के ही पुत्र हैं, फिर पुत्र-पुत्र एकसार॥

।।राजा रानी की गुरू से प्रार्थना।।

।।भजन।। (तर्ज : प्रभु जी !इतनी सी दया कर दो)

गुरू जी! इतनी सी दया कर दो, हम को भी अब गुरूज्ञान मिले।
कुछ और भले ही मिले ना मिले, सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

हम धर्म हीन जो करें कर्म, वह धर्म ही क्या धर्म है।
धर्म सत्य जब होता है, जब मन में सत्य का ज्ञान मिले॥1॥
कुछ और भले ही मिले ना मिले सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

मीरा पथ में सन्देह था किया, वह सन्देह हुआ उजागर है।
वह पथ सत्य जब होता है, जब आपसे गुरू दीक्षा ज्ञान मिले॥2॥
कुछ और भले ही मिले ना मिले, सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

वह राजा शूर और विप्र गये, जिनकी अज्ञान से धर्म जीत नहीं।
क्षमा मांगी गुरू माने कहा, दो शिक्षा जो हमें सम्मान मिले॥3॥
कुछ और भले ही मिलेना मिले, सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

त्रृटियों का शमन् तो प्रायश्चित् है, भविष्य में जीवन सुधार बने।
आप जीवन मुक्ति युक्ति के दाता हैं, हमको भी जीवन पथ दान मिले॥4॥
कुछ और मिल ना मिले, सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

हम वर्षो-वर्षो से दर्श आसे हैं, और तुम दया के दाता हो।
मिल जाये "श्यामसिंह" गुरूसेवा, हमें प्रभु वरदान मिले॥5॥
कुछ और भले ही मिले ना मिले, सन्त दर्शन का सम्मान मिले॥

॥सन्त जी द्वारा आशीर्वाद॥

सन्त ने प्रसन्न वदन हो, सुनी उनकी फरियाद।
उनको देकर के गुरू मन्त्र, दिया रानी को आशर्वाद॥

॥गुरूवाणी॥

ओ३म ऋतं सत्यं तपः श्रुतंतपः शान्तं तपोः दमस्त पश्शम स्तपो,
दानं तपो, यज्ञस्तपो, ब्रह्म भूःर्भूवः सुव र्वब्रह्म तदुपास्वैतत्त्पः॥
"आयुष्मान, विद्यावान भवः सौम्य वर्द्धमानः"

दोहा : रानी नृप ने छू चरण, किया दण्डवत् प्रणाम।
तन कृश हुआ अति आपका, यही करो भवन विश्राम॥
दिया आदर तुमने बहुत, अब एक काम है खास।
काशी पहुंचाओ मुझे, करना कुछ दिन वास॥

राधेश्याम : श्रद्धा से तुम्हारी गद्-गद् हूं, इसे कभी भूल नहीं पाऊंगा।
आवास आपका श्रेष्कर है, यहीं अपनी कुटि बनाऊंगा॥
सुनकर नृप रानी गद्-गद् खुश हुये, रथ एक तैयार कराया है।
प्रेमादर से विठला गुरू को, काशी नगर पहुंचाया है॥

सन्त जी को स्थाई तौर पर चित्तोड़ लाने की तैयारी

दोहा : सं. 1551 चैत मास, कुम्भ श्याम का मेला आया।
गुरू जी को चित्तोड़ लाने का, नृप रानी ने मन बनाया॥

॥भजन॥ (तर्ज : चली-चली मैं पिया)

कर रहे, राजा रानी मनन, करने काशी को गमन, गुरू रविदास को है लाना।
यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥

मुक्ति युक्ति ना मिलती है, बिना प्रभु ध्यान के, ध्यान के।

ध्यान भी ना लगा सके, बिना योग ज्ञान के, ज्ञान के॥
गुरू होवें ज्ञान मूल, हम जावें कैसे भूल, अब सत पथ पर है जानां ॥1॥
कर रहे, राजा रानी मनन, करने काशी को गमन, गुरू रविदास को लाना।
यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥

सब सामान खान-पान ले, दोनों बैठे थे रथ पर, रथ पर।
सारथी को दिया आदेश, चलो काशी पथ-पर, पथ पर॥
करके प्रभु को नमन, मञ्जिल करने को गमन रथ किया शुरू चलाना ॥2॥
कर रहे राजा रानी मननन, काशी करने को गमन
गुरू रविदास को लाना, यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥
यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥

सुख पूर्वक, हुई यात्रा पूर्ण, सच्चे प्रभु की आस पर, आास-पर।
पहुंच गये वे काशी जी, सन्त गुरू वास पर, वास पर॥
उतरे थे रथ छोड़, किया प्रणाम हाथ जोड, किया चरणों शीश झुकाना,3॥
कर रहे राजा रानी मनन, काशी करने को गमन गुरू रविदास को है लाना।
यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥

गुरूने दिया आशीर्वाद, बिठाये थे सम्मान से, सम्मान से।
पग, हस्त प्रक्षालन करा, तृप्त कराये खान-पान से, खान-पान से॥
किया कैसे आगमन, कुटिया कैसे आईमन, "श्यामसिंह" ये स्पष्ट बताना,4॥
कर रहे राजा रानी मनन, काशी करने को गमन, सन्त रविदास को लाना।
यह शिघ्र ही रथ है चलाना॥

राजा रानी द्वारा गुरूजी को निवेदन :

दोहे : राजा रानी ने करी, चरण पकड़ अरदास।
तुमको लेने आये हम, रथ गहो विनय यह खास॥
था पहले सन्त का कहा हुआ, वह कुछ ध्यान किया।
रथ पर चढ़ कर असीन हुये, चित्तोड़ गढ़ी प्रस्थान किया॥

राधेश्याम : सभी चित्तोड़ के नर नारी, कर रहे थे इन्तजार यहां।
रथ आया, उतारे गुरूजी, जय-जय से हुआ सत्कार यहां॥
सबकी प्रेम से आशीश देकर, आश्रम स्थल नृप से बखान किया।
गुरूजी की थी जहां इच्छा, वही श्याम भवन स्थान दिया॥
सन्त जी कुटी के सम्मुख, नित्य यज्ञ धर्म प्रवचन चलाते थे।
दूर तक हुई ध्यान प्रचार खबर, असंख्य नर नारी आते थे॥
जप-प्रवचन हेतु होने लगी भारी भीड़, यह प्रसंश तीर्थधाम हुआ।
गुरू के प्रभाव से विशाल हुआ, कुम्भ श्याम भवन नाम हुआ।
राजा रानी दोनों समय ही, यहां गुरू की सेवा में आते थे।
सभी भक्तों को थे प्रसाद बांटते, गुरूजी को दुग्ध भोग कराते थे॥

सन्त जी ब्रह्मलीन (देहावसान)

राधेश्याम :

हो गये थे तीन वर्ष पूर्णसन्त को, इस कुम्भ स्थान पर आये थे।
सम्वत 1554 चैत शुक्ल 14, सायं ब्रह्मलीन ज्ञान आये थे॥
राजा रानी तोपूर्व से ही थे, अन्य असंख्य भक्त भी बुला लिये।
गुरू ने कहां गंगा जल से नहलाओं, फिर अन्दरूनी भाव सुना दिये॥
भेद ब्रह्मलीन होने का सुन, सब भक्तों में चिन्तायें आई हैं।
अहो! गुरू क्या रोग है बताओं, कहा राणा ने आवे दवाई है॥
गुरू ने कहा रोग नहीं कोई, है निर्धारित समय जो मैं, जाना है।
सांस रूपी कर्ज गिन के दिये जिसने, उसे समय पर लेने आना है॥
एक संकेत करता हूं मैं तुमको, सिराहने खड़े ओ३महरि ध्यान करो।
मेरे पथ नियम पर ही चलना, यह मन में सभी प्रतिज्ञान करो॥
और इसी कुम्भ प्राशर में, वैदिक रीति से दाह संस्कार करना।
तीसरे दिन वृहत देव यज्ञ, दानकर, राख खेतों में प्रसार करना॥
मरने से पूर्व ही सन्देश सभी, भक्तों को देकर चले गये।
प्रभु चिन्तन प्राणायाम किया, ब्रह्माण्ड हिला चले गये॥
जा शून्य में रविदास सन्त, फिर ब्रह्म ज्योति में लीन हुये।
राजा रानी जन सभी भक्त, अति व्याकुल और गमगीन हुये॥
नृप रानी शोक में डूब गये, चहुं ओर था हाहा कार मचा हुआ।
जिस जगह पर गुरू कह कर मरे, उसी जगह दाह संस्कार हुआ॥
इस महासन्त के मरने पर, सारी दुनिया अकुलाई थी।
छा गया अन्धेरा चहुं ओर, सन्तों में उदासी छाई थी॥
अन्तेष्टि उपरान्त नृपने किया यज्ञ, शान्ति मन्त्र जप करवाये थे।
तीसरे दिन महायज्ञ, दीनो को दान और भण्डारा कर जिमाये थे॥

शोक व स्मृति समय पर

॥भजन॥ (तर्ज : छुप गया कोई रे...)

हाय! कहां गये गुरूजी, सब भक्तों को बिसार के।
अब कैसे मिलेगें पथ हाय! जीवन आधार के॥टेक॥
अचानक ही गुरू तुमने कैसे यह गमन है किया।
कैसे खिलेगें फूल-कली, सूना जो चमन हो लिया॥
ये ही तो समय था हमारा, फल लेने का बहार के॥1॥
अब कैसे मिलेंगे पथ, हाय जीवन आधार के॥
योग ज्ञान से मृत्यु अवधि, प्रभु ने कैसे, मेघा में डारी थी।
जीवन भर रहे थे कुशल, आज कोई ना बिमारी थी॥
सभी को बुला उपदेश दिये, आशीश दे गये प्यार के॥2॥
अब कैसे मिलेंगे पथ, हाय! जीवन आधार के॥
नित्य ही रात दिन यहां, होता यज्ञ ध्यान सार था।
दूर-दूर से धमार्थी आते, हुआ वैदिक धर्मसुधार था॥
अब हो गया सुन्न कुम्भ सथल, बिन घर्म ज्ञान प्रचार के॥3॥
अब कैसे मिलेंगे पथ, हाय! जीवन आधार के॥
अब है सभी से विनती, ना कुछ सोच के हो पायेगा।
गुरू अनुसार धर्म कर्म करना, वह खुद ज्ञान बतायेगा॥
मन में समझो खेवट उनको, जीवन की नैया पार के॥4॥
अब कैसे मिलेंगे पथ, हाय! जीवन आधार के॥
राणा ने रचाया महायज्ञ, भण्डारा दीनों का कराया।
स्मृति चित्र लगा उनका, रविदास छतरी भवन बनाया॥
''श्याम सिंह'' करे सेवा यज्ञ, वैदिक मन्त्र उच्चार के॥5॥
अब कैसे मिलेंगे पथ, जीवन आधार के॥
हाय! कहां गये गुरूजी, सब भक्तों को बिसार के।
अब कैसे मिलेंगे पथ, हाय! जीवन आधार के॥

॥ओ३म् शम्॥

॥युग निर्माता धर्म रक्षक सन्त शिरोमणि गुरू रविदास अमर रहे॥

सभी से नम्र निवेदन है कि जैसे भी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में जीवन गाथा पठन किया, उसी प्रकार गद्य को पद्य आदि में रचित कर पुस्तक में दर्शाया गया। त्रुटियों के लिए क्षमा कर, ध्यान से पठन कर धारण करें।

नोट : सन्त शिरोमणि गुरू रविदास का संक्षिप्त इतिहास

1) सन्त रविदास रामायण नाम पुस्तक

एवं

2) कमल ज्योति पत्रिका में लेख

(लेखक श्री रामरत्न राम 'सदस्य राज्यसभा')

से संकलन कर, काव्य में वर्णित किया गया।

देश को विनाश से बचाओ

भ्रष्टाचार, विलास, खेलों आदि में कुल खर्च का आधा भाग अपव्यय, हो रहा है। देश बहुत से दूसरे देशों ने हडपे, सरकार कम्पनियों के अधीन होकर कृषकों की अनदेखी कर कृषी ठप्प हो गई। गौरक्षा जो नही हो रही, स्वास्थ्य सम्पत्ति पर प्रभाव पड़ रहा है। पाठ्यक्रम में पश्चिमी इतिहास देना आरम्भ कर दिया, पूर्वजों, शहीदों ऋषि मुनियों का वर्णन बन्द करने या अपमान में हो रहा है। इस सम्बन्ध में यह भजन पढ़कर जानें।

॥भजन॥ (तर्ज: ऐजी हेंजी हमारी कौन पूछता)

अब तो चाहिए वतन को, दयानन्द ऋषि रविदास।
जिनके तप से इस दुखी राष्ट्र की होवे सुधार की आस॥ अब तो...
किन्तु आज देश का, फिर होने लगा ह्रास है।
अलगाव जाति फिरका पथ वादों का यहां वास है॥
खींच तान है कुर्सियों की, राष्ट्रीयता हताश है।
विदेशी ऋण, विलासी हाट थोपते विलास है॥
भारत का हर नागरिक, अब व्यसनों का दास है।
घोटाले घूस, भ्रष्टाचार, करते ठप्प विकास है॥
राजतन्त्र धारियों ने, खोलिया विश्वास है।
रक्षा, न्याय है खस्ता हाल, मौज में बदमाश हैं॥
कभी देश थी चिड़िया सोने की, जहां आधे लोग निराश॥1॥ अब तो...

अब तो चाहिए वतन को, दयानन्द ऋषि, रविदास॥

कहे वेद गाय जग की माता, शासन न लेकिन जान रहा।

है समृद्धि का स्त्रोत बड़ा बहत्तर उपकार ना मान रहा॥

सर्वे भू गोपाल कहा विनोबा ने, कर इस पर भी ना ध्यान रहा।

वैधानिक धारा अडतालिस, मत लोभ में धत्ता ठान रहा॥

किसी धर्म में नहीं मानी गौकशी, यह उसको नही पहचान रहा।

अशोक राज्य में था कठोर प्रति बन्ध, झण्डे पै क्या चक्र का मान रहा॥

फूट विधि चलाई अंग्रेजों ने, स्वार्थी नेता गण क्यों मान रहा।

कुल तीन सौ बूचड़ खाने थे, अब छत्तीस कोटि सुन कान रहा॥

छत्तिस कोटि गंऊवे थी यहां, रह गई दस कोटि के पास॥2॥ अब तो..

अब हाय देश के कब्जे से, बहुक्षेत्र कीमती चले गये।

सन् ग्यारह में लंका, बर्मा पैंतीस में, हो देश से न्यारे चले गये॥

सन्तालिस में ढाका, पाक अलग, कश्मीर क्षेत्र कुछ चले गये।

तजा तिब्बत कैलाश सन् पंचस में, पूर्व भाग चीन को चले गये॥

बासठ में रकबा बासठ सहस्त्र मील, चीनीज, झपट कर चले गये।

तरेसठ में ब्रह्मा देश अलग, कच्छादि पैंसठ में चले गये॥

कच्चा तिब्बू लंका को बहत्तर में, अंश अरूणांचल कुछ चले गये।

त्रि बिघा क्षेत्र बानवे में दिया, बंगलिये लेकर चले गये॥

खो तेरह खण्डों में कीमती भाग, किया अखण्ड देश का नाश॥3॥ अब तो..

अब तो चाहिए बतन को, दयानन्द ऋषि, रविदास।

कहे भारत कृषि प्रधान देश, पर खेती की दी अनदेखी कर।

सौ में से अस्सी खेती करें, [illegible] है [illegible]॥

खाद बीज में सब्सीड़ी का, करे धोखा लाभ न कृषक को दे कर।

कम्पनी हड़प हर जाती है, प्रशासन, शासन से मिल मिल कर॥

खेलों में अरबों खर्च करें, कृषी पर ध्यान ना रत्ती भर।

लागत से न्यून है कृषि उपज, कृषक मरते आत्महत्या कर॥

दे कम्पनियां मनमाने भाव, इन्हें खाती जाती ठग-ठग कर।

आयात निर्यात कर बिना वजह, कर दिया खेती को जर्जर॥

इसी कारण, खेती की तरफ से, कृषक हुये हैं निराश॥4॥

अब तो चाहिए वतन को दयानन्द ऋषि, रविदास।

भारत था कभी विश्व गुरू, अब शिक्षा विदेशी पढ़-पढ़कर।

निज शास्त्रों में करें काट छांट, भारत के मान को धत् कहकर॥

अध्यात्म शिखर होने से, यह देश हमारा था गुरूतर॥

निज संस्कृति और इतिहास भेंट, मानवता फर्ज से बच्च-बच कर।

महाभारत रामायण को फर्जी कहें, पुरुखों पर लाच्छन रहे हैं धर॥

कहें शिवा प्रताप को आंतकी, मेंटे, भगत, आजाद वीर सावरकर।

तज राष्ट्रीयता और आत्म गौरव, अब शिक्षा उधारी ले लेकर॥

आचार हीन कर दिया देश, फंस रहा विलासी बन-बन कर।

घोर दुखः "श्यामसिंह" वैदिक हटाकर, मैकाली शिक्षा करदी खास॥5॥

अब तो चाहिए वतन को दयानन्द ऋषि, रविदास॥

ओउ्म स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्दमसा विव।
पुनर्ददता घ्नता जानता सं गमेमहि। (ऋग्वेद 5/51/15)

अर्थ : हम सूर्य और चन्द्रमा की भांति कल्याण युक्त मार्ग पर ही चलते रहें, और ज्ञानी जनों से सम्पर्क मेल कर सुमार्ग पर चले, और सुख भोंगे।

इसी के अनुसार एक भंजन यह दिया है, इसमें अपने पूर्वजों व वैदिक धर्मानुसार, मिसकाज रीति रिवाज करने का संकेत दिया है। इसके अतिरिक्त जो रीति चला रहे हैं वे धर्म के विपरीत हैं -

॥भजन॥

(तर्ज : जिस तरह सृष्टि की तूने रचना करी हे भगवान)

कैसे थी धर्म बचाया ऋषियों ने, उनका मानों तुम अहसान।
धर्म नियम पर चाहिए चलना, करके उनका ध्यान॥
सृष्टि के हुये दो अरब वर्ष करीब, यह वेदों में बखाना है।
वेदों से वैदिक धर्म है, जो ऋषि मुनियों ने माना है॥
आरम्भ से ही समय सम्बत मास, दिन रात का ताना बाना है।
पहर घड़ी पल क्षण ये सब, वेदों में ही बखाना है॥
इसी नियम से तिथि नक्षत्र, इससे अलग नहीं माना है।
अंग्रेजी समय तारीख धर्म विरुद्ध जो दो हजार वर्ष से ही जाना है।
पुरातन हिन्दू समय ही अपना, क्यों नया अंग्रेजी माना है।
जन्म आदि हो जिस तिथि में, धर्मानुसार उसे ही मनाना है।
हिन्दुत्व तिथि छोड़ अंग्रेजी करें, यह धर्म का है अपमान॥1॥

धर्म नियम पर चाहिए चलना, करके उनका ध्यान॥

शुभ कर्म जन्म दिन, पर्व, यज्ञ पूजन से मनाना चाहिए।

माता-पिता बैठे ले बालक को, तिलकादि यंही कराना चाहिए॥

माना है, हवा निकलना श्राप, फिर गुब्बारे ना फुडवाना चाहिंए।

घर अन्धेरं कर्म माने बुरा, फिर बत्ती दिये ना बुझाना चाहिए॥

जन्मदिन लाभार्थ मन्त्रों से विशेष यज्ञ कर्म कराना चाहिए।

समान पर त्वंजीव वर्द्धमान आयुष्मान शतं कराना चाहिए॥

वेद मन्त्रों से होवे आयुर्वद्धन पूजा, है जन्मदिन विधि महान ॥2॥

ग्रहस्थ हेतु विवाह संस्कार श्रेष्ठ, कार्य वैदिक रीति से होना चाहिए।

समय है श्रेष्ठ गौ धूली तक समापन, संस्कार रात्री में ना होना चाहिए॥

मधु दही, मिष्ठा खील रौली, आसन शिलादि तैयार होना चाहिए।

जिस तिथि नक्षत्र नियत हुआ, उनकी अवधि तक फेरे होना चाहिए।

फेरो से पूर्व अधर्म है बायें कन्या, सभादि कार्य समापन में होना चाहिए॥

कन्या के बायें वर पूर्वाभिमुख हो, पाणिग्रहण शिलापग फेरे होना चाहिए।

संकल्प, मांग भरा, सप्तपदी हो, तब वधु को बांई ओर कराना चाहिए॥

अन्य धर्म पथों से बचने को, "श्यामसिंह" करें संस्कार विधि संज्ञान ॥3॥

धर्म नियम पर चलना चाहिए, करके उनका ध्यान।

कैसे था बचाया धर्म ऋषियों ने, उनका मानो तुम अहसान॥

रोगी की जांच उचित हो

रोग निदान कारण ना समझे तो, इलाज चलाने से क्या होगा।
बिमारी की जड़ ना जानी तो, दवा दिलाने से क्या होगा।

तीन पांवों की यह तिपाही, थामे रखती है, मशीनों को।
पावा एक भी अगर बढ़ जाये तो, वैसे रुकवाने से क्या होगा ॥1 ॥
रोग निदान कारण ना समझे तो इलाज चलाने से क्या होगा ॥

वात, पित्त कफ ये दोष तीनों, स्वस्थता में होते हैं बराबर ही।
घटे बढ़े देख ना पहचाने जो, अनुमान लगाने से क्या होगा ॥2 ॥
रोग निदान कारण ना समझे तो, इलाज चलाने से क्या होगा ॥

प्रकृति के विरुद्ध खाई वस्तु, ज्ञान हो जावे, तब कमी का।
फिर खाते रहे वही वस्तु, तो दवा खाने से क्या होगा ॥3 ॥
रोग निदान कारण ना समझे तो इलाज चलाने से क्या होगा ॥

मशीनें तन में लगाई प्रभु ने, यकृत पित्ताशय, गुर्दे, अग्नाश्यादि।
है किसमें क्या कमी आई, बिना जांच पाने से क्या होगा ॥4 ॥
रोग निदान कारण ना समझे तो, इलाज चलाने से क्या होगा ॥

लक्षण दर्दादि को ही, रोग माना, असली मूल को है ना पहचाना।
कराई ना जांच गुरू गीताराम से, अज्ञानी को दिखाने से क्या होगा ॥5 ॥
रोग निदान कारण ना समझे तो इलाज चलाने से क्या होगा ॥

ढूंढे सस्ते वस्त्र को ट्रेण्ड टेलर, लाखों के तन को ना समझे हैं।
माहे उजाड़ देवें जब खेत तेरा, "श्यामसिंह" फिर पछताने से क्या होगा।
रोग निदान कारण ना समझे तो, इलाज चलाने से क्या होगा ॥

स्वस्थता व चरित्रता सन्देश

जो चाहो निरोग तन, रखिये इतना ध्यान।
उठ प्रातः पानी पी, सैर कर, तेल मल कर स्नान॥
चोरी और व्यभिचार से, रहो हमेशा दूर।
प्रभु चिन्तन सत्संग से, सुख मिले भरपूर॥
आदत बुरी सुधार कर, मन की रोक तरंग।
दुष्ट जनों से दूर रहे, करें विद्वज का संग॥2॥
एक ईश्वर एक मौत को कभी ना मन से भूल।
सत्य वचन विनम्रता, दोनों सुख के मूल॥3॥
पर धन को मिट्टी समझ, पर स्त्री मात समान।
काया माया पर कभी, करो मत अभिमान॥4॥
तन-मन से रखिये सदा देश धर्म पर प्यार।
स्वजनों से सद्ज्ञान लो, करो अतिथि सम्मान॥5॥
एक कांचन एक कामिनी, मन को लेय लुभाय।
त्याग तपस्या से मनुष्य, ऊंचा बढ़ता जाय॥6॥
मानव की ज्योति है, एक पुरुषएक नार
ताने बाने से बना, यह सारा संसार॥7॥
जीवन मृत्यु जगत में, जन्म मरण नित होय।
दो पाटन के बीच में साबित बचा ना कोय॥8॥
सुबह सायं संन्ध्या हवन, करते जो नर नार।
''श्याम सिंह'' नित्य नियम चल, प्रसन्न हो करतार॥9॥

--- ------

दिनचर्या व ऋतुचर्या

स्वास्थ्य जो चाहो बचाना, दिनचर्या-ऋतुचर्या पालन करो।
विधि नियमानुसार कर उपयोग, एवं कर्तव्य पालन करो॥

दिनचर्या

रात्रि को प्रतिदिन सिराहने, ताम्र लोट में जल होना चाहिए।
दिन के सभी कार्यो से निबट, ठीक नौ बजे सोना चाहिए॥
नियम समय सोने का छः घंटे, ब्रह्म मूहर्त उठ जाना चाहिए।
रात का वह रक्खा जल, तुरन्त बिस्तर छोड़ पीना चाहिए॥
सुबह हवा में एक मील सम, भ्रमण नित्य होना चाहिए।
शौचादि से निवृत्त हो दातुन, नीम बबूल का होना चाहिए॥
स्नान कर दरी बिछा. स्वास्थ्यप्रद आसन मुख्य होना चाहिए।
दिमागी कार्यकताओं को. स्मृतिवर्द्धक आसन करना चाहिए॥
ये सर्वांगासन व शीर्षासन, ओज तेज धारक नित्य करना चाहिए।
फिर जिस प्रभु ने सब कुछ दिया, संध्योपसना से उसका ध्यान होना चाहिए॥
नजला जुखाम बुद्धि स्वस्थ हो. लोम विलोम, अपान कर्म होना चाहिए।
शरीर मन बुद्धि स्वस्थ रहे, प्राणायाम बाह्य अभ्यान्तर होना चाहिए॥
दीप जला चक्षु खोल देख, फिर कुछ बाद आंखे जल में डुबोना चाहिए।
यही है त्राटक विधि ज्योतिवर्द्धक, नित्य कर्म यह होना चाहिए॥
प्रातः काल अल्पाहार में, अंकुरित या उबला चना होना चाहिए।
कुछ समयोपरान्त चाहे तो, दूध का उपयोग होना चाहिए॥
स्वस्थता से कर्म योग्य हो, अतः उपरोक्त विधि प्रयोग होना चाहिए।
सबसे निबटने के उपरान्त, आवश्यक कार्यो में लग जाना चाहिए॥

शरद ऋतु के असौज कात्तिक, जौं गेहूं चावल भोज होना चाहिए।
दूध में शक्कर, आंवला साथ, दाल मूंग निम्बू होना चाहिए॥
हेमन्त के मंगशिर पौष में, दूध घी उड़दादि पौष्टिक होना चाहिए।
मधुर व अम्ल पदार्थ ले, दही मधु भी प्रयोग होना चाहिए॥
शिशिर ऋतु माघ फागुण, हेमन्त अनुसार पथ्य होना चाहिए।
बसन्त में चैत बैसाख समय, जौं आदि मूंग दाल से होना चाहिए॥
परवल, करेला, मूली अदरक लें, नित्य भ्रमण होना चाहिए।
ग्रीष्म ऋतु के ज्येष्ठ, षाढ में खाना वही जौ सत्तू भी होना चाहिए॥
चन्दन, खश, गुलपुष्प इलायची, शर्बत इनका मिश्रित होना चाहिए।
वर्षा ऋतु के श्रावण भादौ में, शरद ऋतु सार खाना चाहिए॥
ताजी दही शहद मिश्रित लेवें, आसव अरिष्ट भी होना चाहिए।
स्वास्थ्य रक्षार्थ उपरोक्त विधि, ऋतु अनुसार होना चाहिए॥

सूक्ष्म दिव्य उपचार (स्वास्थ्य हेतु)

दिव्य दृष्टि लोचन चहो, परम विचित्र विशाल।
त्राटक करना चाहिए, लाभ मिले तत्काल॥1॥
प्रातःकाल खटिया से उठ, पिये तुरन्त ही पानी।
ताके चार पै रोग ना आवे, बात घाघ ने जानी॥2॥
तुलसी पत्र ज़ीरा सफेद लें, निम्बू रस, गौमुत्र में घोट।
झाई धब्बा ठीक हो, खर्च ना होवें नोट॥3॥
फली सौं हंजना लीजिये, सुनिये दिव्य विचार।

सरसो राई मेलकर, डालो नीत अचार ॥4 ॥
दो दिन रखिये धूप में, औषध हो तैयार।
नित्य नियम जी भर छको, सिमटें उदर विकार ॥5 ॥
नाम पुनर्नवा जा निये, औषध मोल अमोल।
पाण्डू रोग में दीजिये, पानी में रस घोल ॥6 ॥
निम्बू रस, शहद को, गौमुत्र दुगुना कर मिलाय।
नित्य प्रातः साथ लेते रहे, मोटापा देय घटाय ॥7 ॥
घुटनों में यदि दर्द हो, लहसुन खीरा खाय।
चलो फिरो आराम से, दर्द हवा हो जाय ॥8 ॥

॥ज्ञान उपदेश॥

बाकी रहे घडी दो रात, उठ बैठों तब जान प्रभात।
मुक्ति सहित लो ओउ्म नाम, सोचो धर्म अर्थ का काम॥
दैनिक चर्या के अनुसार, करो काज तज आलस्य सार॥
वृथ समय को करो ना नष्ट, व्यर्थ काज कर लहौ ना कष्ट॥
जो शुभ कर्म रत हो विद्वान, नित्य नियम पर रखते ध्यान॥
उनको देना आदर दान, अश्वमेघ के यज्ञ समान।
दया धर्म का मूल विचार, जो सबका है करते उपकार॥
जिनसे दुखः पाता ना कोई, जानों मनुज रत्न है सोइ॥
गुण स्वाभाव अन्वय सुआचार, यही चार आदर आधार॥

अभिवादन शीलस्य, नित्यं पसोविन:।

चत्वारि सम्प्रवर्धन्त, आयुर्विद्या यशोबलम्॥ (अनुस्मृति, विदुर)

॥भजन॥

"माता पिता भगवान हैं"

माता पिता के ही चरणों में, होते चारों धाम महान हैं।
इन्हीं को ही वेदों में माना, धरती का भगवान है॥
नौ माास गर्भ में रखकर, मां भरती असंख्य कष्ट महान है।
जन्मोंपरान्त भी सुख से रखती, मिला सदादुख: गीला स्थान है।
माता पिता के ही चरणों में, होते चारों धाम महान हैं॥1॥
मातृदेवो, पितृदेवों भव:, यह वेदों में भी प्रमाण है।
जन्म दाता परवरिस कर्ता, ये ज्ञान देते महान है॥2॥
मात पिता के चरणों में, होते चारों धाम महान हैं॥
तुम सेवा करोगे माता पिता की, आगे ऐसी ही होगी सन्तान है।
वृद्धों की न करोगे जो सेवा, बच्चे भी लेते ऐसा ज्ञान है॥3॥
योग्य सेवक बच्चे होते, मां बाप के अरमान हैं।
आदर सेवा जो करते बच्चे, होवें योग्य और महान हैं॥4॥
मात पिता के ही चरणों में, होते चारों धाम महान हैं॥
भविष्य उज्जवल उन्नत होता, जो नहीं करते अपमान है।
विपरीत वालों को पशु योनि, आगे दे देते भगवान हैं॥5॥
माता-पिता के ही चरणों में, होते चारों धाम महान हैं॥
सेवा आदर से माता पिता की, बने श्रवण रविदास महान हैं।
दिव्यानन्दपथ चलो "श्यामसिंह" रखते ईश्वर ध्यान हैं॥6॥
मात पिता के ही चरणों में, होते चारों धाम महान हैं॥

डा0 भीमराव अम्बेड़कर (जीवनी)

ऐजी हेंजी था सौ भाग्य देश को, मिला विभूति एक महान।
सभी वर्गों को सप्रेम मिलाया, उसका कैसे उतारे अहसान ॥टेक ॥
महाराष्ट्र प्रान्त में छोटा सा, अम्बाड़े गांव नाम था।
दलित महार जाति के रहते, भीमाबाई रामजीराव नाम था॥
14 अप्रैल 1891 शुभदिन आया, जन्मे भीमराव नाम था।
चौदह वर्ष में हो गया विवाह, नौ वर्षी रमा बाई नाम था॥
उस समय दलितों का प्रवेश रोक, दर पै खड़े स्कूल कुछ प्राप्त किया।
थे बड़ौदा धीश सियाजी, गायकवाड प्रवेश बन्ध खत्म काम किया॥
1912 में बी.ए. करा, अपने राज्य में, सेना लेफ्टीनेन्ट पद भार दिया।
उच्च शिक्षा इच्छा समझ करी मदद, भेजने को विदेश तैयार किया॥
सहयोग से उनके प्राप्त किया अम्बेड़कर ने, पी.एच.डी. बार एटला ज्ञान ॥1 ॥
सभी वर्गों....

राष्ट्र मे समाजोत्थान कराने हेतु, नारी शिक्षा आह्वान किया।
पुरुष सम्मान सब कार्यो में, अधिकार महिला का मान किया॥
शिक्षित संगठित, संघर्षकारी, होना दलितो को ये ज्ञान दिया।
होने को मुक्ति शोषण से, सार्वभौमिक शिक्षा सम्मान दिया॥
अधिकार दिलाने दलितों को, भावी वचन व्रत ठान लिया।
साकार करने इस कार्य को, पेशा वकालत ही मान लिया।
बाद आजादी, संविधान प्रारूप समिति, अध्यक्ष इन्हें मान लिया।
26 जनवरी 1950 को लागू, राष्ट्र का गणतन्त्र संविधान किया।
धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्र हेतु "श्यामसिंह" कानून बना दिया महान ॥2 ॥
सभी वर्गों......

दोहा : पं0 नेहरू शासन में उन्हें मिला, विधि मन्त्री पद भार।
छः दिसम्बर, सत्तावन प्रातःकाल, बाबूजी गये थे स्वर्ग सिधार॥

– डा0 भीमराव अम्बेड़कर अमर रहें। –

जब तक जागृत हो नही, जन मन में स्वभाव।
ध्वस्त ना हो पाये यहां, आपस का टकराव ॥1 ॥
होने मत दो और अब, उत्पन्न यहां क्लेश।
इसके हित में शिघ्र ही, चुनिये राह विशेष ॥2 ॥
होना अब तो चाहिए, शुरू आज यह काम।
भेद भाव को त्याग कर, देकर द्वेष विराम ॥3 ॥
धीरे-धीरे यतन से, मन पर कसों लगाम।
इच्छाओं पर दिव्य तब, लगजा स्वत: विराम ॥4 ॥
पर्दा संशय का हटे, झटके ना फिर चित।
साधे साधना तब कहीं, साधन सधे निमित ॥5 ॥
धीरज धर्म ना छोड़िये, जब लग घट में प्राण।
निमग्न मन चलते रहो, दूर नहीं कल्याण ॥6 ॥
नाम अमर यदि चाहते हो, चाहते हो कल्याण।
गरल पान करना पड़े, तज करके अभिमान ॥7 ॥
अजर-अमर है आत्मा, नाशवान है देह।
मिट्टी वत् यह लोग सब, क्यों करता है नेह ॥8 ॥
गौरी काली भैरव गणेश के, ओरे देश प्रतीक।
भगवद् गीता के सन्देश की, भटक गया क्यों लीक ॥9 ॥
जहां कंही जो भी मिलें, पान फूल सम्मान।
रक्खो संजो कर प्यार से, करो नहीं अभिमान ॥10 ॥

परस्पर प्रेम भाव/मेल ज्ञान सक्ति

1) ओ३म संगच्छध्वं, संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे संजाना ना उपासते॥ (ऋग्वेद 10/191/2)

- कदम से कदम मिलाकर चलना, करना प्यार है।
मधुर वाक् मिलकर बोलना, ज्ञान करना मन सुधार है॥
पूवे के विद्वान देव गण ने, किया ज्ञान सम्यक् सुधार है।
पूर्वजों की भांति समान मन से, चलते रहने से ही उद्धार है॥

2) ओ३म समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सहचित मेषाम्।
समानंमन्त्रम भिमन्त्र वः समानेन वोहविषा जुहोमि॥ (ऋ.10/191/3)

- परस्पर मिलकर सभी के, गुप्त विपयों के विचार रहो।
मिल बैठ सको, विचार हेतु, सबसे परस्पर प्यार हों॥
सभा हो एक जैसी, और सबका मन एक सार हो।
जीवन सुखी सफल होगा, सबमें पारस्परिक उपकार हो॥

3) ओ३म समानी वः आकुतिः समाना हृदयानि वः।
समान मस्तु वोमनो यथा वः सुसहा सति॥ (ऋ. 10/191/4)

- संकल्प करते रहो कि, भावना व्रत हो।
मन में ना द्वेष होवे, मन हृदय समान हो॥
बाहर से जैसा आचरण, अन्तः करण में व्यवहार हो।
पुरुषार्थ की हो भावना, सबकी उन्नति भरमार हो॥

4) मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन मास्व सार मुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वां वाचं वदत भद्रया॥ (अथर्ववेद 3/30/3)

- आर्यजन श्रेष्ट हों जब, द्वेष ना करें भाई भाई से।

इसी तरह एक बहन, बैर ना करे मां जाई से॥
सभी परस्पर समान भाव, करके रहें एक ताई से।
लेकर व्रत परस्पर, वाणी करें कल्याणाई से॥

5) ओ३म दृते दृंहुमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वांणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहंचक्षुषासर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥
(यजुर्वेद 36/18)

- ओ३म रक्षक सबमें हैं, मुझमें भी वह व्याप्त हो।
सभी प्राणी बन्धु से मेरा, मित्र दृष्टि से विलाप हो।
मित्र दृष्टि से देखने का, मेरा भी अधिकार हो।
मित्र जैसे हों ''श्यामसिंह', परस्पर ना कभी तकरार हो॥

6) ओ३म कुर्वन्नेवेह कर्मांणि जिजी विषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्य थे तोऽस्ति न कर्म लिष्यते नरे॥ (यजुर्वे 40/2)
- हे मनुष्य तुम इच्छा करो, जीवे सौ साल तक।
केवल स्वार्थ भाव के, काम करने की टालकर॥
निष्काम जो करोगे कर्म, तुम मुक्ति को पाओगे।
सकार कर्म अगर करते रहोगे, आवागमन में ही पछताओगे।

॥उद्धार वाणी॥

1) स एवं भवति य एवं वेद
ज्ञान का अर्थ मात्र मानना नहीं, वैसा ही हो जाना है।

2) मिठास हो खुशामद नही, इन्साफ हो बदले की भावना नहीं।
किसी की ओर दोषों पर ध्यान नहीं, अन्दर के गुण भी देखो।

3) बाधाओं से रुके नहीं, संकटों एवं प्रलोभनों में झुके नहीं।
निन्दाओं से आप विचलित ना हो, आगे बढ़ने के ध्येय पर डटे रहो।

4) पवित्र विचार प्रवाह ही जीवन है, विचार प्रवाह का विघटन मृत्यु है।
विचारों की पविता ही एवं सत्यादि महाव्रत है।

5) ऊर्जा व उत्साह आत्मविश्वास से भरा हुआ जीवन जीओ।
भगवान ने तुम्हें महान करने हेतु चयन किया है।

6) बिना पुरुषार्थ सेवा के चित्त की शुद्धि नहीं होती। और चित्त की शुद्धि के बिना प्रमात्म तत्व की अनुभूति नहीं होती है। अत: सेवा के कार्य ढूंढते रहना चाहिए।

7) प्रत्येक मनुष्य त्रृटियों से भरा, दोषों से भरा है, सर्वगुण सम्पन्न निर्लेप निर्दोष परमात्मा ही है। अत: किसी के दोष देख आलोचना करना अधर्म है। अपने दोष दूर करना ही धर्म है।

8) स्वकर्मणा तम्भ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानव: (गीता 18/46)
आत्मधर्म ही तुम्हारा धर्म है, स्वधर्म में अवस्थित रहकर, स्वकर्म से परमात्मा की पूजा करते हुये तुम्हें समाधी व सिद्धि प्राप्त होगी।

9) छ: घंटे निन्द्रा के लिए, एक घण्टा नित्य कर्म के लिए, एक घंटा योगकर्म के लिए, दो घंटे परिवार के सदस्यों से वार्ता, सलाह

आदि में देते हुये, चौदह घंटे कठोर परिश्रम कार्य करना चाहिए। यही जीवन में समय का श्रेष्ट प्रबन्ध है।

10) तप स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणीधान ये योग में आते हैं। इनका दृढ़ता पूर्वक पालन करना चाहिए। बार-बार सत गुरूओं के उपदेशों आचरणों को ध्यान में रखते हुये, उन पर चलने का मन बनानाचाहिए। (स्वामी रामदेव)

11) ओउ्म ईशा वास्यामिदँ सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ (यजुर्वेद अ.40/1)

- यह संसार उस ईश्वर का ही रचाया हुआ है, वह सब जगह मौजूद है, सब जगह ही निवास करता है। उसके दिये ये सब पदार्थ जो हमे जरूरत व कर्मानुसार मिलते है अर्थात जितना उचित होता है। सबको धन सम्पत्ति दी है। उस उतने पर ही सन्तोष कर प्रयोग करना धर्म है। कभी भी लोभ नीति से (बेईमानी से) दूसरों के धन पर अधिकार मत करो, यह सबसे बड़ा अधर्म है।

12) 'पात्रेण सत्यस्था पिहितं मुखम.....(यजुर्वेद)

- वेद में अविधा, भ्रम, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि से हटकर सत्य को जानने, समझने तथा आचरण करने को कहा है। सत्य को प्रत्येक का आत्मा चाहता है। सभी प्रकार के छल-कपट, आडम्बर को त्याग कर के प्रत्येक नर-नारी को ध्यान, योगभ्यास से आत्मा को पवित्र करके उस सत्यस्वरूप परमात्मा को जानना चाहिए

-स्वामी दिव्यानन्द 'सरस्वती'

॥ओउ्म शम्॥

वही नर धन्य होता है

कौन –

लगे उपकार में जीवन, वही नर धन्य होता है।
रहे नित राष्ट्र सेवा में, वही नर धन्य होता है।

दुखाये दिल न दीनों का, मिठाये दुखः दुखियों के।
करें असहाय की सेवा, वही नर धन्य होता है।
रहे नित राष्ट्र सेवा में वही नर धन्य होता है॥1॥

करे उपचार रोगी का, कर्म निष्काम सेवीका।
बन्धाये शोक में धीरज, वही नर धन्य होता है।
रहे नित राष्ट्र सेवा में, वही नर धन्य होता है॥2॥

हटाये तम अविधा को, पढ़ा विद्याधिकारी का।
विकासी वेद विद्या का वही नर धन्य होता है॥3॥

हितैषी हीन जन का हो, भुला सब भेदभाव को।
लगे धन-धान्य रक्षा में, वही नर धन्य होता है।
रहे नित राष्ट्र सेवा में, वही नर धन्य होता है॥5॥

भुलाकर द्वेष द्वेषी से, बढ़ाये ये प्रेम सज्जन से।
रखे हर जीव का जीवन, वही नर धन्य होता ह॥
रहे नित राष्ट्र सेवा में, वही नर धन्य होता है॥5॥

घृणा न "दिव्य" में आये, उसे सेवा सदा भाये।
करे सम्मान मान्योंका,वही नर धन्य होता है॥
रहे नित राष्ट्र सेवा में, वही नर धन्य होता है॥6॥

किस वस्तु का कब्ज किस वस्तु से ठीक होता है।

अखरोट से कब्ज हुआ – ठीक हो, दाना अनार से।
अमरूद से कब्ज हो – सौंठ सैन्धा डार के॥
अरवी/गागली का कब्ज – दाल चीनी खट्टे क्षार से।
आम का यदि कब्ज है – दूध दियो शक्कर डार के॥
आलू का अधि के कब्ज में – इमली सोड़ा खाने का।
अरहर के कब्ज में – शुद्ध घी व निम्बू खाने से॥
उड़द हो या दाल उड़द कब्ज – सौंठ, मिर्च, हींग, अदरक खाने से।
केला अधिक से कब्ज – सौंठ व नमक के खाने से॥
खजूर से हुआ कब्ज – जावे मट्ठा छाछ से।
खरबूजे खाये का कब्ज – निम्बू यां शहद खाओ एक छांट के॥
खीर अधिक खाने का कब्ज – सोडा या मूंग दाल से।
खोया (मावा) का कब्ज – खाओ सोड़ा निम्बू डाल के॥
गेहूं के बने कब्ज में – सोड़ा या सौफ है उपचार के।
गाजर से बना कब्ज – गुड़ खाओ सूक्ष्म प्यार से॥
गुड़ राब से बना कब्ज – जावे खटाई खांर से।
फूलगोभी द्वारा कब्ज – गरम मशाले में अदरक डाल के॥
घी के अधिक प्रयोग से कब्ज – गरम पानी में निम्बू डाल के।
चने खाने से बने कब्ज – खाओ अजवायन पीस के॥
चावल भात से होवे कब्ज – प्रयोग करो काली मिर्च नमक पीस के।
चाय कॉफी से बना कब्ज – पिओ दूध सौंफ पीस डाल के।

चिलगोजे का बना कब्ज - खाओ खटाई कोई ख्याल के॥
छाछ से बने अफारा कब्ज - निम्बू खाओ नमक डाल के।
तेल का बना कब्ज - सिरका प्रयोग निम्बू अचार के॥
दही खा बना कब्ज - खीरा लो शिकंजवी निम्बू की डार के।
दूध से हो जावे कब्ज - सोड़ा ले ले या पानी चूने का निखार के॥
पालक साग से होवे अजीर्ण - दूर होवे सोये में सौंठ साथ लेना।
पिस्ते अधिक से अजीर्ण - छोटी हरड पीस जलसाथ लेना॥
पूड़ी या कचौरी भटूरा अजीर्ण - जावे अर्क अजवान से।
बैंगन से किसी को बने कब्ज - घी लेवे या सिर का अनुमान से॥
बेसन प्रयोग जो बना कब्ज - घी ले लो या लो दाने अनार के।
मक्खन से बना अजीर्ण - नमक हो प्रयोग या खण्ड मधु धार के॥
मसूर, खाये से बना कब्ज - घी खाावे या सिरका ध्यान से।
मछली खाने से हो अजीर्ण - मधु अमचूर या अजवायन से॥
मांस का अजीर्ण - खाने से दूर हो गुड एक-दो बार के।
मटर खाने से बना अजीर्ण - हल्का गरम पानी लेना थोड़ा नमक डार के॥
शराब प्रयोग से बना अजीर्ण - फिटकरी लो नारियल नीर से।
सेम खाये बना अजीर्ण - मसाला गरम पीस ले लो नीर से॥
हलवा जैसा भी हो, कब्ज हो - डेड़ तोला नमक, अर्क अजवायन से

स्वास्थ्य हेतु आसन करने चाहिए

यह पुस्तक "जीवन दर्शन" नाम के संकेत से करने का अभिप्राय है जीवन के सुधार हेतु जो भी नियम विधि अभ्यास है, ज्ञान हेतु जानकारी हो। मानसिक एवं बौद्धिक शक्ति कर्म से लाभ व ज्ञान अनुभव प्राप्त करने के उपाय आदि संक्षेप में वर्णित पुस्तक में, जितना संज्ञान में था/या शास्त्रों, पत्रिकाओं से छंटन करा दिया गया है।

जो लाभ कार्य तन के शक्ति कर्म से होते हैं, वह योगाभ्यास श्रेणी (खंड) में योगासन से होते हैं। हठयोग में लगभग 84 प्रकार के आसन हैं। जिनका सम्बन्ध शारीरिक, व मानसिक आरोग्य से है। सभी प्रकार के रोगों में योगासन अपने प्रभाव से लाभ उत्पन्न कर स्वस्थता प्रदान करते हैं। जैसे कि - पेट के रोगों में उत्तानपाद, नाभी आसन, मर्कटा,पवनमुक्ता, हलासन,वज्र, मण्डूक, सुप्तवज्रा, मत्यस्या, मयूरासन, गौमुखासन योग मुद्रासन आदि। अब अधिकतर रोगी मधुमेह (शुगर) के हो रहे हैं। यह एक तत्व (इन्सुलीन) की कमी से होता है। इस तत्व को अग्नाशय (पैन्क्रीयाज) बनाता है, यह पेट की एक मशीन है। जब यह कमजोर हो जाता है, इन्सुलीन नहीं बनता और शुगर रोग हो जाता है। बाहर से ही इन्सुलीन (इन्जेक्शन आदि) प्रयोग करना पड़ता है।

अतः उस मशीन को सृदृढ़ करने हेतु (रोग से बचाव हेतु) योगासन अवश्य ही करने चाहिए। यह कार्य सीखने की विधि लिखकर नहीं समझ सकते हैं, विवरण इस लिए नहीं दिया। योग अभ्यास प्रत्यक्ष (सम्मुख) दिखाकर, विधि समझाकर ही जान सकते हैं। अभ्यास जानकारी हेतु, मेरे पूज्य गुरू परम पूज्य, श्रद्धेय डा0 श्री स्वामी दिव्यानन्द 'सरस्वती' (पातंजल) योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर) के यहां समय लगाये। और जो इस क्षेत्र के हैं वह मेरे पास 'मानव हितकारी चिकित्सालय खुब्बनपुर (हरिद्वार) सेवा करा सकते हैं।

-डा0 श्यामसिंह चौहान 'आर्य'

पुस्तक मिलने के स्थान पते :

1) परमपूज्य गुरू श्रद्धेय डा0 श्रीस्वामी दिव्यानन्द 'सरस्वती' योगधाम आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)
2) श्री चन्द्रशेखर जी (प्रधान) विधायक, हनुमान कॉलोनी, रुड़की।
3) विरेन्द्र प्रभु, भगवानपुर (हरिद्वार)
4) श्री डा0 अमर सिंह नौटियाल (थापुल/बिहारीगढ़)
5) श्री डा0 दर्शनलाल 'आर्य' (बिहारीगढ़)
6) श्री खूबचन्द जी साध, जनरल स्टोर छुटमलपुर (सहारनपुर)
7) श्री हरद्वारी चौहान, रेस्टोरेन्ट बाईपास, ज्वालापुर (हरिद्वार)
8) श्री रविन्द्र कुमार चौहान, गौरक्षा समिति, कटारपुर (हरिद्वार)
9) श्री रणवीर सिंह चौहान, कल्पना फोटो स्टूडियों, चौली (हरिद्वार)

हमारे यहां पुराने रोगों : दमा, अर्श (बवासीर) एसिडीटी, अल्सर, स्त्री-पुरुषों के गुप्त रोगों (सफेदी, मासिक कमी, नपुंसकता, शिघ्रपतन, धात गिरना आदि), शुगर, क्षय पुराने बुखार, चर्म रोग का इलाज विश्वसनीय आशान्वित होता है।

योगासन अभ्यास भी जान सकते हैं।

सम्पर्क करें :

मानव हितकारी चिकित्सालय

खुब्बनपुर, विकासखण्ड भगवानपुर

जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन नं० 9758004093

आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकर, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है-उसी की उपासना करने योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब कार्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाएि।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।